हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

जनवरी, 2006 वर्ष 4 अंक 11

ज़बीहुल्लाह (अ़०)

ये फ़ैज़ाने नज़र था या कि
मकतब की करामत थी
सिखाए किस ने ईस्माईल को
आदाबे________फ़रज़न्दी

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका **वार्षिक** चन्दा समाप्त हो चुका है।
कृपया अपना **वार्षिक** चन्दा जल्द भेजिए।

—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computer Institute - 9335214913

विषय एक नज़र में

• अदभुत परीक्षा	सम्पादकीय	3
• कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०)	5
• प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	6
• दीने इस्लाम का मिज़ाज	मौलाना सय्यद अबुल हसन अ़ली हसनी	8
• नबी की याद	मर्यम कादिरी	13
• हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का अख़्लाक़	अल्लामा शिबली नोमानी	14
• संक्षिप्त इस्लामी इतिहास	मौ० अब्दुस्सलाम नदवी	18
• आज़ाद और नेहरू	हबीबुल्लाह आजमी	19
• नबीये अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)	मौ० मु० आरिफ संभाली नदवी	21
• मरे हुए लोगों की रूहों को हाज़िर करना	अबू मर्गूब	24
• आधुनिक तकनीक और बदलती शिक्षा के मूल्य	डा० एम नसीम	25
• वैदिक काल की सभ्यता	इदारा	27
• आप पर बे अ़दद दुरूदो सलाम हो	अबू मर्गूब	29
• तिब्बे नबवी	मु० गुफरान नदवी	30
• मीठी बात करो रे भाई	मु० गुफरान नदवी	31
• आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	32
• क़ुर्बानी और अ़क़ीक़ा	इदारा	33
• गाइडों द्वारा ऐतिहासिक स्थलों का.....	प्रो० गुरनाम सिंह	37
• गर्दूं पर अनगिनत फ़िरिश्ते थर थर थर थर कांप रहे	अशअर राम नगरी	38
• अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	हबीबुल्लाह आज़मी	40

❑❑❑

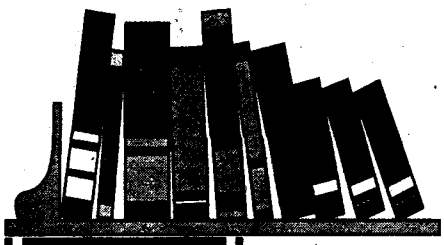

अद्भुत परीक्षा

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

परीक्षाओं से कौन नहीं परिचित है। पढ़ाई हो, ड्राइविंग, मशीन चलाना हो, बिना परीक्षा न तो कोई प्रमाण पत्र मिलता है न कोई जाब। एक परीक्षा प्रियतम और प्रेमी में होती है जिसका यह मर्म समझना बड़ा ही कठिन है कि वह परीक्षा दोनों के विधाता की ओर से होती है या प्रेमिका अथवा प्रियतम अपने प्रेमी की परीक्षा स्वयं लेते हैं।

इन सब से हट कर एक परीक्षा ईश्वर की ओर से होती है जिस का मर्म (राज़) या हित (मस्लिहत) मेरा मत है कि, कोई नहीं जानता। उसे तो बस परीक्षार्थी जानता है या परीक्षक, हम इतना जानते हैं कि ईश परीक्षाओं की गिन्ती करना असम्भव है आज हम उन ही परीक्षाओं में से एक अदभुत परीक्षा की चर्चा करेंगे, इस लिये कि इस परीक्षा की याद इसी मास ज़िलहिज्जा में मनाई जाती है।

सबसे पहले तो यह बताएंगे कि ईश्वर ने अपने बन्दों की परीक्षा की घोषणा किस प्रकार की है।

बताया : "हम तुम को अवश्य परखेंगे, भय की समस्या से, भूख की समस्या से, माल की हानि की समस्या से, जान की हानि की समस्या से, फलों की हानि की समस्या से।"

फिर अपने नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को आदेश दिया कि :

"मंगल सूचना सुना दो उन धैर्यवीरों को जिन पर कोई भी आपत्ति या विपदा आई तो वह कह उठे कि निःसन्देह हम तो अल्लाह के हैं और उसी की ओर लौट कर जाने वाले हैं। (अलबक़रः १५५, १५६)

अर्थात जिन वस्तुओं की हानि हुई उनको देकर और उनका प्रेम देकर हमारी परीक्षा ली गई थी, वास्तव में तो वह हमारे ईश्वर ही की थीं।

आगे बताया : "यह वही लोग हैं जिन पर उनके स्वामी (रब) की कृपाएं हैं और उसकी दया। और यह वही हैं जिन्हों ने सत्य मार्ग पालिया।" (अलबकरः १५७)

एक दूसेर स्थान पर बताया : "क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वह बस इतना कहने पर छोड़ दिये जाएंगे कि "हम ईमान लाये" और उनको परखा न जाएगा? (अर्थात क्या उन की परीक्षा न ली जाएगी?) जब कि हम इनसे पहले के सभी लोगों की परीक्षा ले चुके हैं, (अर्थात उन को परख चुके हैं,) अल्लाह को तो अवश्य देखना है कि सच्चे कौन हैं और झूठे कौन हैं।"(२९:२)

मतलब यह कि सामर्थ्यानुसार परीक्षा सभी की ली गई उस का राज़ वही जाने, उसके कर्मों पर प्रश्न नहीं उठाया जा सकता उस ने अपने नबियों और रसूलों की जो सब के सब पाप रहित हैं साधारण लोगों की अपेक्षा कठिन परीक्षाएं लीं यहां उन्हीं उच्च श्रेणी के परीक्षार्थियों में अल्लाह के एक पैग़म्बर जिनको अल्लाह ने अपने ख़लील (मित्र) की उपाधि दी अर्थात इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (अ़लैहिस्सलाम) की कुछ परीक्षाओं की चर्चा करना है।

ह़ज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम बाबुल में आज़र के घर पैदा हुए यह इतिहास से पूर्व का

काल है उस समय का इतिहास परिवर्तित धार्मिक पुस्तकों तथा अनुमानों से लिखा गया अतः उस पर पूर्ण भरोसा न कर के हम सत्य क़ुर्आन का सहारा ले रहे हैं। क़ुर्आन में अल्लाह तआ़ला बताता है :

"और हम ने इब्राहीम को साधारण समय से पहले ही उनको स्वास्थ तथा सत्यमार्गी बुद्धिमानी प्रदान कर दी थी और हम इस बात को जानते थे" (२१:५१)

फिर जब उन्होंने देखा कि लोग मूर्ति पूजा में ग्रस्त हैं तो :

"उन्होंने अपने पिता और अपनी क़ौम से कहा यह मूर्तियां कैसी हैं जिनको तुम घेरे बैठे हो? उन लोगों ने जवाब दिया हम ने अपने बाप दादा को इनकी इ़बादत (पूजा) करते पाया है। इब्राहीम (अ़०) ने कहा निःसन्देह तुम भी पथ भ्रष्ट हो और तुम्हारे बाप दादा भी प्रत्यक्ष रूप में पथ भ्रष्ट थे। लोग कहने लगे : तू हमें सत्य बात बता रहा है या खिल्ली कर रहा है ? आपने जवाब दिया। (सुनो यह मूर्तियां तुम्हारी स्वामिका नहीं है) । वास्तव्र में तुम्हारा रब (स्वामी) वही है, तथा धरती आकाश का भी वही रब (स्वामी) है जिसने इन सब को पैदा किया है और मैं इस पर साक्षी हूं और अल्लाह की सौं तुम्हारे जाने के पश्चात तुम्हारी इन मूर्तियों की गत बनाऊंगा।(फर इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को अवसर मिल गया) पस उन्होंने सब के टुकड़े टुकड़े कर दिये सिवाए उनके बड़े वाले के (यह समझ कर) कि हो सकता है लोग उससे पूछें (कि इन सब को किस ने तोड़ा फिर उत्तर न पाकर अपनी ग़लती को समझें, पर ऐसा न हुआ, जब उन लोगों ने अपनी मूर्तियों की दुर्दशा देखी तो) कहने लगे हमारे उपास्यों के साथ यह (कुकर्म) किस ने किया, निःसन्देह वह तो बड़ा ही अत्याचारी है। लोगों ने कहा हम ने एक नवयुवक इब्राहीम को इस तरह् की बात करते सुना था। लोग कहने लगे पकड़ लाओ उसे लोगों के सामने ताकि लोग (उस की भी बुरी गत) देखें। (इब्राहीम लाए गये) चौधरियों ने पूछा : ऐ इब्राहीम हमारे उपास्यों के साथ तुम ही ने यह कुकर्म किया है? इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने (उन पथ भ्रष्टों की बुद्धि शुद्ध करने के लिए) कहा बल्कि यह सब कुछ इसी बड़े (अर्थात बड़ी मूर्ति) ने किया है यदि यह बुत बता सकें तो इन से पूछ लो।

पस वह लोग अपने अंतःकरण में झाकने लगे और अपने ही से कहने लगे निःसन्देह अत्याचारी तो तुम लोग स्वयं ही हो (अर्थात उनकी अन्तर्आत्मा स्वीकारने लगी कि अत्याचारी हम ही हैं) परन्तु उनकी बुद्धियां ओंधी हो गई (और कहने लगे) तुम को ज्ञात है कि पत्थर की मूर्तियां बोलती नहीं हैं। तब इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने कहा क्या तुम अल्लाह को छोड़ कर ऐसे की पूजा (इबादत) करते हो जो तुम को न नफा पहुंचा सके न नुक़्सान, धित्कार है तुम पर और उन पर जिन को तुम अल्लाह (ईश्वर) को छोड़कर पूजते हो, (यह सुनकर लोग ताव में आ गये) और कहने लगे इस शख़्स को जला दो और अपने उपास्यों की सहायता करो अगर तुम को कुछ करना है।

फिर क्या था सब ने मिल कर लकड़ियां ढेर कीं और आग लगा कर बड़ा अलाव तैयार कर के उस समय के किरान द्वारा इब्राहीम (अ़०) को बीच आग में उतार दिया। ईश्वर (अल्लाह)कहता है :

हमने आग को आदेश दिया कि ऐ आग (हमारे प्रिय) इब्राहीम पर ठण्डी और सुरक्षा वाली बन जा। (पस इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम आग के बीच ऐसे बैठे रहे जैसे हरी भरी वाटिका में बैठे हों, ईश्वर बताता है)

उन लोगों ने इब्राहीम के साथ बुराई का इरादा किया था पस हम ने उनको असफल बना दिया और इब्राहीम को और (उनके भतीजे) लूत को उन जालिमों से छुटकारा दिला कर धरती के

(शेष पृष्ठ २० पर)

कुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

बुरी बातों से बचने का तरीका :

बेहयायी के काम के करीब भी न जाया कारो, वह खुल्लम खुल्ला हो या छुपा हुआ। (अल–अनआम : १५२)

अल्लाह तआला ने खुले और छुपे हर गुनाह से बचने का हुक्म दिया है। खुले गुनाह तो यह है: जैसे डाका, चोरी, कत्ल, झूट और छुपे गुनाह यह हैं जैसे बुग्ज, हसद (इर्षा) कीना (कपट) गीबत (पीठ पीछे बुराई) आदि, आदमी को इन सब गुनाहों से बचना चाहिए।

अल्लाह तआला ने इस आयत में इन गुनाहों से बचने का तरीका यह बतलाया है कि जिन चीजों से और जिन जगहों से यह गुनाह पैदा होते हैं हम उन जगहों से बचें, हम इन गुनाहों के पास न जाएं। जो आदमी नदी के करीब नहीं जाता है वह उस में डूबता भी नहीं है। जो आग के पास नहीं जाता वह उससे जलता भी नहीं इसी तरह जो गुनाह की जगह न जाएगा वह उस में फंसेगा भी नहीं।

कुर्आन से मुतअल्लिक कुछ जरूरी बातें :

सब मिल कर अल्लाह की रस्सी मजबूत पकड़ो। (आलि इम्रान : १०३) अल्लाह की रस्सी से मुराद कुर्आने पाक है। इस के हुक्मों पर मज़बूती से जम जाना चाहिए।

पैगम्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कहा है कि मैं तुम में दो चीजें छोड़ता हूं जब तक उनको मजबूती के साथ पकड़े रहोगे भटकोगे नहीं, वह दो चीजें हैं अल्लाह की किताब और उसके रसूल की सुन्नत।

अल्लाह की रस्सी टूट नहीं सकती है हां छूट सकती है, जिस के हाथ से छूट जाएगी वह गुमराही के गढ़े में जा गिरेगा और जो मजबूत पकड़े रहेगा वह उसी के सहारे निकल जाएगा, कुर्आन खुदा की आखिरी किताब है इस में दीन से मुतअल्लिक हमारे नफअ व नुक्सान की सभी बातें लिखी हुई हैं, इस को छोड़ कर हमें किसी दूसरी तरफ रूख न करना चाहिए।

कुर्आन का अदब (सम्मान) :

और जब कुर्आन पढ़ा जाए तो उस की तरफ कान लगाए रहो और चुप रहो। (अअराफ : २०४)

एक तो यह कि जब कुर्आन पढ़ा जाए तो चुप रहो।

दूसरे यह कि उस की तरफ कान लगाए रखो ताकि मतलब जिहन में आए। अगर मअना नहीं समझते हो तो अदब से कुर्आन सुनने का सवाब तो मिल ही जाएगा। तुम्हारे सामने अगर किसी हाकिम का हुक्म पढ़ा जाए तो खामोश होकर बड़े गौर से सुनोगे खुदा से बड़ा दूसरा कौन है इस लिए उसके कुर्आन का इहतिराम (सम्मान) जियादा करना चाहिए।

खुदा की निअमतों का इज्हार :

और जो इहसान है तेरे रब का सो बयान कर। (जुहा)

अल्लाह ने हम को जो निअमतें दी हैं उन पर इतराना मुनासिब नहीं है लेकिन उन पर परदा डालना भी ठीक नहीं है। अपने सच्चे दोस्तों से खुदा की मिहरबानियों का जिक्र जरूर करना चाहिए। यह भी एक किस्म का शुक्र है। जो लोग अल्लाह की दी हुई निअमतों को छुपाते हैं वह उस की नाशुक्री करते हैं। अल्लाह तआला चाहता है कि अपने बन्दों पर अपनी निअमत का असर देखें

एक सहाबी हुजूर की खिदमत में आए, मैले और बहुत मअमूली कपड़े पहने हुए थे। हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने पूछा क्या तुम गरीब हो? कहा नहीं, अल्लाह ने चान्दी सोना, बाग खेत, सब ही दे रखा है। फरमाया: फिर खुदा की निअमतों का असर भी तो जाहिर होना चाहिए।

(पृष्ठ १७ का शेष)

मुहल्ले में पहुंचा तो बोला कि मैं मुसलमान हूं एक अन्सारी ने आकर सूचना दी कि वह कहता है कि मै मुसलमान हूं । आपने फरमाया कि तुम में कुछ लोग ऐसे हैं जिन के ईमान का हाल हम उन्हीं पर छोड़ते हैं, उन में से एक फरात बिन हयान है। इतिहासकारों ने लिखा है कि वह बाद को सच्चे दिल से मुसलमान हो गये और आंहजरत सल्ल० ने उनको यमामा में एक जमीन प्रदान की जिसकी आमदनी चार हजार दो सौ थी। (जारी)

प्रस्तुति : हसन अन्सारी

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

१/६१. जन्नत में सत्तर हजार आदमी बेहिसाब दाखिल होंगे

हजरत इब्नि अब्बास (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया – मुझ पर उम्मतें पेश की गयीं। मैंने एक नबी को देखा और उनके साथ कुछ लोग, और एक नबी उनके साथ एक या दो आदमी, और एक नबी उनके साथ कोई नहीं, नागाह मुझको एक बड़ा हुजूम दिखाया गया। मैंने गुमान किया कि यह मेरी उम्मत है तो मुझसे कहा गया कि यह मूसा और उनकी कौम है, आप उफुक की तरफ देखिए। मैंने देखाा तो एक बड़ा हुजूम दिखाया गया। फिर मुझसे कहा गया दूसरे उफुक की तरफ देखो, मैंने देखा तो बड़ा हुजूम दिखाया गया, कहा गया कि यह तुम्हारी उम्मत है। और उनके साथ सत्तर हजार आदमी बगैर हिसाब, बगैर अजाब, जन्नत में दाखिल किये जाएंगे। फिर आप उठे और अपने हुजरे में तशरीफ ले गये और लोग, उनके बारे में जो जन्नत में बगैर हिसाब, बगैर अजाब दाखिल होंग, गुफतगू करने लगे। बाज ने कहा यह शायद वह लोग हों जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुहबत में रहे और बाद में कहा शायद वह लोग हों जो इस्लाम में पैदा हुए और अल्लाह का शरीक नहीं ठहराया। इसी तरह बहुत सी बातें कर रहे थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ लाये और फरमाया, कौन सी गुफतगू करते हो। उन्होंने आपको खबर दी। आपने फरमाया, यह वह लोग हैं जो न फूंक झाड़ करते हैं न करवाते हैं, और न फाल लेते हैं,और अपने रब पर भरोसा करने वाले हैं। अुकाशः बिन मुहसिन खड़े हो गये और कहा कि अल्लाह से दुआ कीएिज कि मुझे उनमें शामिल कर दे। आपने फरमाया, तुम उनमें से हो। फिर दूसरा आदमी खड़ा हुआ और कहा कि अल्लाह से दुआ कीएिज कि मुझे भी उनमें शामिल कर दे, आपने फरमाया : अुकाशः तुम पर बाजी ले गये।

२/७०. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ

हजरत इब्नि अब्बास (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते थे –

अल्लाहुम्म लक अस्लम्तु व अलैक तवक्कल्तु व अिलैक अनब्तु व बिक खासम्तु अल्लाहुम्म अअूज बिअिज़्ज़तिक ला अिलाह अिल्ला अन्त अन् तुजिल्लनी अन्तल्–हय्युल्लजी ला यमूतु वल्जिन्नु वल्अिन्सु यमूतून।

ऐ अल्लाह! मैंने तेरे सामने सर झुकाया और तुझ पर ईमान लाया और मैंने तेरे सहारे पर झगड़ा किया। ऐ अल्लाह! मैं तेरी अिज्जत के साथ पनाह चाहता हूं कि सिवा तेरे कोई मअबूद नहीं कि तू मुझे गुमराह करे। तू जिन्दः है, न मरेगा; जिन और इन्सान मर जायेंगे। (अरबी दुआ किसी आलिम से सीखें)

३/७१. अहले तवक्कुल का कौल

हजरत इब्नि अब्बास (र०) से रिवायत है कि हजरत इब्राहीम (अ०) जब आग में डाले गये तो कहा, हस्बुनल्लाहु व निअमल् वकील। और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब लोगों ने कहा तुम्हारे लिए लोगों ने बड़ा सामान और तैयारी की है, उनसे डरो, तो उनका ईमान जियादः हो गया। उन्होंने कहा, 'हस्बुनल्लाहु व निअमल वकीलु'। हजरत इब्नि अब्बास (र०) से एक रिवायत है कि हजरत इब्राहीम (अ०) का दूसरा कौल, हस्बियल्लाहु व निअमल वकीलु भी था।

४/७२. जन्नतियों के दिल परिन्दों की तरह होंगे –

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, एक जमात जन्नत में दाखिल होगी, उनके दिल परिन्दों के दिल की तरह होंगे।

५/७३. अल्लाह पर भरोसे की मिसाल–

हजरत जाबिर (र०) से रिवायत है – वह गज्वः नज्द में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों के साथ पलटे तो दिन के आराम का वक्त ऐसी वादी में हुआ जिसमें बबूल के दरख्त बहुत थे। हम लोग दरख्तों के नीचे साया लेने के लिए अलग हो गये और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम एक बबूल के दरख्त के नीचे उतरे, अपनी तलवार एक डाल में लटका दी, हम सब सो

गये। क्या देखते हैं कि रलूसुल्लल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमको पुकार रहे हैं और एक देहाती आपके पास खड़ा है। आपने फरमाया, इसने मेरी तलवार मुझ पर खींच ली और मैं सो रहा था। जब मैं जागा तो तलवार इसके हाथ में थी। कहा आपकी हिफाजत कौन करेगा ? मैंने तीन मर्तबा अल्लाह कहा। इसको सजा नहीं दी और बैठ गया।

और एक रिवायत में हजरत जाबिर (र०) ने कहा कि हम जातुर्रिकाअ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे। हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को छोड़ दिया। एक मुश्रिक आदमी आया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तलवार पेड़ से लटकी थी। उसने आप पर तलवार खींच ली और कहा, मुझसे डरते हो? आपने फरमाया नहीं। कहा, कौन आपकी हिफाजत करेगा? आपने फरमाया, अल्लाह। पस तलवार उसके हाथ से गिर पड़ा और आपने उठा ली और फरमाया, तेरी हिफाजत कौन करेगा? कहा आप बेहतर लेनेवाले बनिए। आपने फरमाया क्या तुम कहते हो अशहदु अल्लाह इलाह इल्लल्लाहु व अन्नी रसूलुल्लाहि? कहा, यह तो नहीं मगर हां इसका अहद करता हूं कि न आपके साथ जंग करूंगा और न आप से जंग करने वालों के साथ शरीक हूंगा। आपने उसको छोड़ दिया। वह अपने साथियों के पास आया और बोला मैं सब से बेहतर के पास से आया हूं।

६/७४. तवक्कुल और हरकत

हजरत उमर (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है– फरमाते थे कि अगर तुम अल्लाह पर भरोसा करो जैसा भरोसा करने का हक है तो तुमको इस तरह रिज्क देगा जैसे चिड़ियों को देता है। सुबह को खाली पेट जाती हैं और शाम को शिकमसेर वापस आती हैं।

७/७५. सोते वक्त की दुआ

हजरत बराअ(र०) इब्नि आजिब से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ललल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब तुम अपने बिस्तर पर आओ तो यह कहो।

अल्लाहुम्म असलम्तु नफसी अिलैक व वज्जहतु वजहिय अिलैक व फव्वज्तु अमरी अिलैक व लजअतु जहरी अिलैक रगबतं वरहबतन अिलैक ला मलजा व ला मन्जा मिन्क अिल्ला अिलैक आमन्तु बिकिताबिकल्लजी अन्जल्त व नबिय्यिकल्लजी अर्सल्त।(अरबी आलिम से सीखें)

ऐ अल्लाह ! मैंने अपने नफ्स को तेरे सिपुर्द किया और मैंने मुंह तेरी तरफ मोड़ा और मैंने अपना काम तेरे सुपुर्द किया और मैंने अपनी पीठ तेरी तरफ रगबत के साथ डरते हुए लगाई; नहीं है हमारा ठिकाना और न नजात हमको मगर तेरी तरफ। मैं तेरी उस किताब पर ईमान लाया जो तूने उतारी और उस नबी पर जिसको तू ने भेजा।

आपने फरमाया अगर तुम उस रात में मर जाओगे तो इस्लामी फित्रत पर मरोगे। और अगर सुबह करोगे तो भलाई को पहुंच जाओगे। (बुखारी –मुस्लिम)

एक और रिवायत में हजरत बराअ (र०) से रिवायत है कि मुझसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया–जब तुम अपने बिस्तर पर आओ तो वजू करो जैसे नमाज के लिए वजू किया जाता है फिर अपने सीधे पहलू पर लेट जाओ और इस तरह कहो (और ऊपर वाली दुआ इर्शाद फरमायी।) फिर फरमाया, इन कलिमात को सब से आखिर में कह कर सोओ।

८/७६. अैन खतरे में अल्लाह पर भरोसा

हजरत अबू बक्र र० से रिवायत है कि मैंने मुश्रिकीन के कदम देखे, हम ग़ार में थे और वह हमारे सरों पर। मैंने कहा या रसूलुल्लाह । अगर इनमें का एक भी अपने कदम के नीचे देखे तो हमको देख लेगा। आपने फरमाया, ऐ अबू बक्र (र०)। तुम ऐसे दो [redacted] मुतअल्लिक क्या गुमान करते हो जिनका तीसरा अल्लाह है। (बुखारी मुस्लिम)

९/७७. घर से निकलने के वक्त की दुआ –

हजरत उम्मे सल्मा (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब अपने घर से निकलते थे तो फरमाते थे–

अनुवाद – शुरू किया मैंने अल्लाह के नाम से और मैंने अल्लाह पर भरोसा किया–ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह चाहता हूं कि गुमराह होऊं या गुमराह करूं, खुद डगमगाऊं या दूसरों को फिसलाऊं, जुल्म करूं या मुझ पर जुल्म किया जाय, जिहालत करूं या मुझ पर जिहालत की जाय।

हजरत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो अपने घर से निकलते वक्त यह दुआ पढ़े तो उसको कहा जायगा कि तूने हिदायत पाई, तेरी किफायत की गयी और तू बच गया और उससे शैतान दूर कर दिया जायेगा। (अबू दाऊद, तिर्मिजी)

दीने इस्लाम का मिज़ाज

और उसकी ख़ास-ख़ास बातें

मौ० स० अबुल हसन अली हसनी

नोट : सम्बन्ध के लिए पिछला अंक देखें।

इसी गैरत का असर है कि पैगम्बर किसी शरअी हुक्म में किसी तब्दीली के न रवादार होते हैं और न किसी हुक्म पर अमल, किसी की सिफारिश पर मुल्तवी रखते हैं। वह अपने व बेगाना सब पर एकसां तौर अल्लाह के अहकाम का नेफाज (आदेशों [redacted] लागू करना) करते हैं। कबीला बनी मखजूम की एक खातून के बारे में जिसने चोरी की थी, ओसामा बिन ज़ैद र० सिफारिश करने आप के पास आये तो अल्लाह के रसूल स० ने गजबनाक होकर फरमाया, "क्या अल्लाह के मुतय्यन कर्दा हुदूद के बारे में सिफारिश करते हो?" फिर आपने तकरीर में फरमाया, "ऐ लोगो! तुम से पहले उम्मतें इसलिए हेलाक हुईं कि जब उनमें कोई असरदार आदमी चोरी करता तो उसको छोड़ देते और कोई कमजोर आदमी चोरी करता तो उसे सजा देते। कसम है खुदाये पाक की, अगर मोहम्मद स० की बेटी फात्मा र० भी चोरी करेगी तो मैं उसका हाथ काटने से दरेग न करूंगा।"

यह वह गैरत है जो नबियों के नायबीन में मुन्तकिल हुई। उन्होंने भी कामयाबी व नाकामी और नफा नुकसान से आंख बन्द करके कुरआनी तालीमात और शरअी अहकाम की हिफाजत की। तारीख में इसकी शानदार मिसाल फारूक आजम र० का वह वाकिया है जो जिबला इब्न अयहम गस्सानी के पांच सौ लोगों के साथ मदीना आया। जब वह मदीना में दाखिल हुआ तो उसको और उसके ज़र्क़ बर्क लेबास को देखने के लिए मदीने के लोग निकल आए। जब हजरत उमर र० हज के लिए तशरीफ ले गये तो जिबला भी साथ गया। वह बैतुल्लाह का तवाफ कर ही रहा था कि बनी फिजारा के एक शख्स का पांव उसके लटकते हुए तहबन्द की कोर पर पड़ गया और वह खुल गया। जिबला ने हाथ से फिजारी की नाक पर जोर का थप्पड़ मारा। फिजारी ने हजरत उमर र० के यहां नालिश की। अमीरूल मोमिनीन ने जिबला को बुला भेजा। वह जब आया तो उससे पूछा कि तुमने यह किया? उसने कहा, "हां, अमीरूल मोमिनीन इसने मेरा तहबन्द खोलना चाहा था, अगर काबा का एहतराम माने न होता तो मैं इसकी पेशानी पर तलवार का वार करता।" हजरत उमर ने फरमाया, "तुमने इकरार कर लिया। अब या तो तुम इस शख्स को राजी कर लो वरना मैं किसास लूंगा।" जिबला ने कहा कि आप मेरे साथ क्या करेंगे? हजरत उमर ने फरमाया कि इससे कहूंगा कि तुम्हारी नाक पर वैसे ही थप्पड़ मारे जैसे तुमने उसके नाक पर मारा। जिबला ने हैरत के साथ कहा कि अमीरूल मोमिनीन । यह कैसे हो सकता है वह एक आम आदमी है और मैं अपने इलाके का ताजदार हूं। हजरत उमर र० ने फरमाया कि इस्लाम ने तुमको और इसको बराबर कर दिया। अब सिवाय तकवा के किसी चीज की बुनियाद पर तुम इससे अफजल नहीं हो सकते। जिबला ने कहा, "मैं समझता था कि इस्लाम कबूल करके मैं जाहिलियत के मुकाबले में ज्यादा बाइज्जत हो जाऊंगा।" हजरत उमर र० ने फरमाया, "यह बातें छोड़ो। या तो इस शख्स को राजी करो वरना किसास के लिए तैयार हो जाओ।" जिबला ने जब हजरत उमर र० के यह तेवर देखे तो अर्ज किया कि मुझे आज रात गौर करने का मौका दिया जाय। हजरत उमर र० ने उसकी बात मान ली। रात के सन्नाटे और लोगों से छिप कर जिबला अपने घोड़ों और ऊंटों को लेकर शाम की तरफ चला गया। सुबह मक्का में उसका पता निशान न था। एक जमाने के बाद जब जसामा बिन मुसाहिक कनानी से उसके दरबार में शरीक हुए थे हजरत उमर र० ने उसकी शाहाना शान व शौकत के हालात सुने तो फरमाया, "वह महरूम रहा, आखिरत के बदले में दुनिया खरीद ली। उसकी तिजारत खोटी रही"।

इसका यह मतलब नहीं है कि अंबियाकिराम दावत व तबलीग के सिलसिले में हिकमत से काम नही लेते। ऐसा नहीं है। अल्लाह तआला फरमाता है :

तर्जुमा – और हमने कोई पैगम्बर नहीं भेजा मगर वह अपनी कौम की जबान बोलता था कि उन्हें (खुदा के अहकाम) खोल खोल कर बता

दे।" (सूर : इब्राहीम – ४)

जबान का मतलब यहां चन्द जुमलों और अलफाज में महदूद नहीं वह उसलूब, तर्जे कलाम सब पर हावी है। इसका दिलकश नमूना हजरत यूसुफ अ० की जेल में अपने दोनों साथियों से नसीहत, हजरत इब्राहीम अ०और हजरत मूसा अ० के अपनी अपनी कौम और अपने अपने दौर के बादशाहों से मुकाल्मे में नजर आता है। अल्लाह तआला का इरशाद है :–

तर्जुमा : ऐ पैगम्बर ! लोगों को दानिश और नेक नसीहत से अपने रब के रास्ते की तरफ बुलाओ और बहुत अच्छे तरीके से उनसे मुनाजरा करो।" (सूर : नहल १२५)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा किराम को जब दावत व तबलीग की मुहिम पर रवाना फरमाते तो नरमी, शफकत, सहूलन व आसानी पैदा करने और बशारत देने की हिदायत फरमाते। आपने हजरत मआज बिन जबल र० और हजरत अबूमूसा अशअरी र० को यमन भेजते हुए हिदायत फरमाई।

"(आसानी पैदा करना सख्ती न करना, खुशखबरी देना वहशत न पैदा करना)" और खुद अल्लाह तआला ने आप को मुखातब करते हुए फरमायाः

तर्जुमा : "(ऐ मोहम्मद स०)। खुदा की मेहरबानी से तुम्हारी उफताद मेजाज इन लोगों के लिए नरम वाके हुई है और अगर तुम बदखू और सख्त दिल होते तो यह तुम्हारे पास से भाग खड़े होते। (सूर : आलेइमरान –१५६)

अल्लाह के रसूल स० ने सहाबा किराम से फरमाया (तुम्हें आसानी पैदा करने के लिए उठाया गया है, दुश्वारी पैदा करने के लिए नहीं उठाया गया है)

इस सिलसिले के बेशुमार दलायल हैं। सूर : इनाम में बहुत से नबियों के नामों के साथ जिक्र करते हुए फरमाया गया :–

तर्जुमा : "यह वह लोग थे जिनको हमने किताब और फैसला कुन राय कायम करने की सलाहियत और नबूवत अता फरमाई थी।" (सूर : इनाम – ८९)

लेकिन इस "आसानी" का तअल्लुक तालीम व तरबियत और जुजवी मसायल से था जिनका अकायद और दीन के बुनियादी उसूलों से कोई तअल्लुक नहीं। जिन बातों का तअल्लुक अल्लाह के हुदूद से है उनमें हर दौर के अंबिया किराम फौलाद से ज्यादा बेलचक और पहाड़ से ज्यादा मजबूत होते हैं।

नुबूवत की इम्तेयाजी खुसूसियात में चौथी बात यह है कि उनका असल जोर आखिरत की जिन्दगी पर होता है वह इसका इस कसरत से जिक्र करते हैं कि यह बात उनकी दावत का मरकजी नुकता बन जाती है और साफ जेहन के साथ उनके वाकयात और अकवाल का मुताल्या करने वाला साफ महसूस करता है कि आखिरत उनका नसबुलऐन है। यह बात उनकी फितरते सानिया बन जाती है और आखिरत की फिक्र उनको हमेशा बेचैन रखती है।

अंबिया की ईमान बिल आखिरत की दावत और उसकी तबलीग सिर्फ अखलाकी या इस्लामी जरूरत के तहत नहीं थी। उनके तरीके दावत व तबलीग में यह ईमान विजदानी कैफियत और कल्बी जजबा और दर्दमन्दी के साथ होता है जबकि दूसरे तरीके में वह एक जाब्ता और जरूरत की हैसियत रखता है।

पांचवीं बात यह है कि बेशक अल्लाह तआला ही हकीकी हाकिम है और शरीअत साजी सिर्फ उसी का हक है। उसका इरशाद है :–

तर्जुमा : "खुदा के सिवाय किसी की हुकूमत नहीं है।" (सूरः यूसुफ–४०)

क्या उनके वह शरीक हैं जिन्होंने उनके लिए ऐसा दीन मुकर्रर किया है जिसका खुदा ने हुक्म नहीं दिया। (सूर : शूरा – २१)

लेकिन दर हकीकत खालिक व मखलूक हाकिम व महकूम के तअल्लुक से कहीं ज्यादा वसीय, लतीफ और नाजुक है। कुरआन मजीद ने अल्लाह तआला के नाम व सिफतं को जिस तफसील के साथ बयान किया है उसका मकसद कतअन यह नहीं होता कि बन्दे से सिर्फ इतना मतलूब है कि वह उसको अपना सब से बड़ा हाकिम समझ ले और उसके साथ किसी को शरीक न करे बल्कि इन नामों और सिफात और उन आयात का जिनमें खुदा से मुहब्बत और तअल्लुक और उसके जिक्र की तरगीब आई है साफ तकाजा यह मालूम होता है कि उसरे दिलोजान से मुहब्बत की जाय और उसकी तलब व रजा में जान खपा दी जाये उसकी हम्द व सना के गीत गाये जायें उठते बैठते उस के नाम का वजीफा पढ़ा जाय उसका खौफ हर वक्त बना रहे उसी के सामने हाथ फैलायें उसी के जमाल पर हर वक्त निगाहें जमी रहें। उसी की राह में सब कुछ लुटा देने यहांतक कि सर कट

देने का जजबा बेदार रहे।

छठी बात यह है कि अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम का मखलूक से और उन कौमों से जिन की तरफ वह भेजे जाते हैं। पोस्टमैन जैसा तअल्लुक नहीं होता जिसकी जिम्मेदारी सिर्फ उसे उन लोगों से कोई सरोकार नहीं और उन लोगों को इस चिट्ठी रसां से कोई मतलब नहीं। वह अपने कामों और इख्तियारात में बिल्कुल आजाद हैं। और यह कौमों का तअल्लुक नबियों से सिर्फ वक्ती और कानूनी होता है। यह वह गलत और बेबुनियाद खयाल है जो उन हल्कों में रायज था जो नुबूवत के बुलन्द मकाम से नावाकिफ थे। और हमारे इस दौर से उन हल्कों में फैला हुआ है जो सुन्नत के मकाम से नावाकिफ और हदीस के मुनकिर हैं और जिन पर मजहब के मसीही तसव्वरात का असर और मगरिब के तर्जे फिक्र का गल्बा है।

नबी पूरी इन्सानियत के लिए उसवये कामिल, आला काबिले तकलीद नमूना और अखलाक के बारे में सब से मुकम्मल और आखिरी मेआर होते हैं। उन पर अल्लाह की इनायतें और तजल्लियां होती हैं। उनके अखलाक व आदात और उनकी जिन्दगी का तौर तरीका सब खुदा की नजर में महबूब है। नबी जिस रास्ते को इख्तियार करते हैं वह रास्ता खुदा के यहां महबूब बन जाता है और उसको दूसरे रास्तों पर तरजीह हासिल होती है। उनके रास्ते पर चलना उनके अखलाक की झलक पैदा करना अल्लाह की रजा हासिल करने का सरल रास्ता हो जाता है इसलिए कि दोस्त का दोस्त दोस्त, और दुश्मन का दोस्त दुश्मन, समझा जाता है। कुरआन मजीद में आता है :–

तर्जुमा : "ऐ पैगम्बर । (लोगों से) कहदो कि अगर तुम खुदा को दोस्त रखते हो, तो मेरी पैरवी करो, खुदा भी तुम्हें दोस्त रखेगा, और तुम्हारे गुनाहों को माफ कर देगा, और खुदा बख्शने वाला मेहरबान है।" (सूरः आले इमरान–३१)

इसके बरअक्स जो जुल्म पर कमर बान्धे हुए हैं और कुफ्र की राह इख्तियार किये हुए हैं उनकी तरफ दिल का मैलान अल्लाह की गैरत को हरकत में लाने वाला है और अल्लाह से बन्दे को दूर करने वाला है, फरमाया गया –

तर्जुमा : "और जो लोग जालिम हैं उनकी तरफ मायल न होना, नहीं तो तुम्हें दोजख की आग आ लपटेगी, और खुदा के सिवा तुम्हारे और दोस्त नहीं हैं (अगर तुम जालिमों की तरफ मायल हो गये) तो फिर तुमको (कहीं से) मदद न मिल सकेगी। (सूर : हूद – ११३)

इन पैगम्बराना मखसूस आदात व अतवार का नाम शरीअत की जबान में "खिसाले फितरत" और "सुननुल्हुदा" है जिसकी शरीअत तालीम व तरगीब देती है। इनका इख्तेयार करना लोगों को नबियो के रंग में रंग देता है। और यहवह रंग है जिस के बारे में अल्लाह तआला का इरशाद है :–

तर्जुमा : "(कह दो हमने) खुदा का रंग (इख्तियार कर लिया) और खुदा से बेहतर रंग किस का हो सकता है, और हम उसकी इबादत करने वाले हैं।" (सूर : बक्र : १३८)

एक आदत की दूसरी आदत, एक अखलाक के दूसरे अखलाक, एक तौर तरीके के दूसरे तौर तरीके पर दीन व शरीअत में तरजीह का यही राज है, इसी वजह से इसको इस्लामी शरीअत ईमान वालों की पहचान, फितरत के तकाजे की तकमील और इसके खिलाफ तरीकों को जाहिलियत की पहचान करार देती है और इन दोनों तरीकों और रास्तो में फर्क यह है कि एक को खुदा के पैगम्बरों और उसके महबूब बन्दों ने अपनाया दूसरे को उन लोगों ने अपनाया जिनके पास हिदायत की रोशनी और आसमानी तालीमात नहीं है। इस उसूल के तहत खाने पीने, कामों में दायें बायें हाथ का फर्क, लेबास व जीनत, रहन सहन के बहुत से उसूल आ जाते हैं।

जहां तक अल्लाह के रसूल मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तअल्लुक है इस पहलू पर और ज्यादा जोर देने की जरूरत है। आप की जात के साथा सिर्फ जाब्ता और कानून का तअल्लुक काफी नहीं, बल्कि ऐसा रूहानी और जजबाती तअल्लुक मतलूब है जो जान व माल से बढ़कर हो। सही हदीस में आया है :–

"उस वक्त तक तुम में से कोई मोमिन नहीं होगा, जब तक मैं उसे अपनी जात से ज्यादा अजीज व महबूब न हूं।" (मुसनद अहमद)

इस सिलसिले में उन तमाम बातों से बचने की जरूरत है, जो इस तअल्लुक व मुहब्बत के सोतों को खुश्क या कमजोर करते हैं। सूर : अहजाब, सूर : हुजरात और सूर : फतेह को गौर से पढ़ने, तशहुद व नमाज जनाजा में दुरूद व सलात की शमूलियत पर गौर कुरआन में दुरूद की तरगीब और

दुरूद की फजीलत में कसरत से वारिद होने वाली अहादीस को गौर से पढ़ने से पता चलता है कि अल्लाह के रसूल स० के बारे में एक मुसलमान से इस से कुछ ज्यादा मतलूब है जिसको सिर्फ कानूनी और जाब्ते का तअल्लुक कहा जाता है। इसके लिए वह तअल्लुक मतलूब है जिसके सोते दिल की गहराइयों से फूटते हैं। उसे कुरआन में "ताजीर" व "तौकीर" के लफ्ज से अदा किया है:–

तर्जुमा : 'उसकी मदद करो और उसको बुजुर्ग समझो" (सूर : फतेह – ६)

इसकी रौशन मिसालें गजवये रजीअ के मौके पर खुबैब इब्नि अदी की जैद बिन दुस्ना के वाकया, गजवये ओहद के मौके पर अबूदुजाना और हजरत तल्हा के तर्जे अमल, इसी गजवे में बनी देनार की मुसलमान खातून के जवाब, सुलह हुदैबिया के मौके पर अल्लाह के रसूल स० के साथ सहाबा किराम की वालेहाना मुहब्बत और अदब व एहतराम में देखी जा सकती है जिन की बिना पर अबूसुफियान (जो उस वक्त तक मुसलमान नहीं हुए थे) की जबान से बेसाख्ता निकला कि "मैंने किसी को किसी से इस तरह मुहब्बत करते नहीं देखा, जिस तरह मुहम्मद सल्ल० के साथी उनसे करते हैं।" और कुरैश के कासिद उरवा बिन मसऊद सकफी ने कहा कि "खुदा की कसम मैंने किसरा व कैसर के दरबार भी देखे हैं, मैंने किसी बादशाह की ऐसी इज्जत होते हुए नहीं देखी जिस तरह मोहम्मद सल्ल० के साथी मोहम्मद सल्ल० की इज्जत करते हैं।

इस पाक मुहब्बत के बगैर जो शरअी अहकाम व आदाब के ताबे व उसवये सहाबा र० के इत्तेबा के साथ हो, उसवये रसूल की कामिल पैरवी और शरीअत की मजबूत पकड़ मुमकिन नहीं। मुसलमान जो कभी खुदा और रसूल के इश्क की बदौलत दुन्या में सुर्खरू थे, इसके बगैर सर्द राख का ढेर बने हुए हैं :–

बुझी इश्क की आग अन्धेर है,
मुसलमां नहीं खाक का ढेर है।

दीन की सातवीं खुसूसियत उसकी कामिलियत और दवाम है क्योंकि यह एलान कर दिया गया है कि अकायद व शरीअत की मुकम्मल तालीम दी जा चुकी है। इरशाद होता है :

तर्जमा : "मोहम्मद स० तुम्हारे मर्दों में से किसी के वालिद नहीं हैं, बल्कि खुदा के पैगम्बर और खातमन्नबीयीन हैं, और खुदा हर चीज से वाकिफ है।" (सूरः अहजाब–४०)

और कुर्आन ने साफ–साफ कह दिया :

तर्जुमा : "आज हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया, और अपनी नेमतें तुम पर पूरी कर दीं, और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसन्द किया।" (सूरः मायदा – ३)

यह आयत अरफात के दिन हज्जतुलविदा के मौके पर सन् १० हिज्री में नाजिल हुई। बाज जहीन यहूदी आलिम जो कदीम मजाहिब की तारीख से वाकिफ थे, भॉप गये कि यह वह एजाज है जो तनहा मुसलमानों को दिया गया है। उन्होंने हजरत उमर र० से कहा कि ऐ अमीरूलमोमिनीन आप अपनी किताब में एक ऐसी आयत की तिलावत करते हैं जो अगर हम यहूदियों पर नाजिल होती तो हम उस दिन ईद मनाते ।

अल्लाह के रसूल मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद नुबूवत का इख्तेताम इन्सानियत का एजाज और उनके साथ रहमत व शफकत का नतीजा था, और इसका एलान था कि अब इंसानियत पुख्तगी और कमाल के मरहले को पहुंच गई, और नुबूवत के सिलसिले के खात्मा से इन्सानी सलाहियतें इस खतरे से महफूज़ हो गईं कि थोड़े थोड़े समय के बाद एक नबी की दावत का जुहूर हो और समाज अपने सारे मसायल से हट कर इसकी हकीकत मालूम करने और उसकी तसदीक करने में लग जाये। इस तरह महदूद इंसानी ताकत को रोज रोज की आजमाइश से बचा लिया गया। और नस्ले इंसानी को बार बार आसमान की तरफ निगाह उठाने के बजाय अपनी सलाहियतों के इस्तेमाल के लिए इस जमीन पर ध्यान देने की दावत दी गई।

इस अकीदा ही की बुनियाद परयह उम्मत खतरनाक साजिशों का मुकाबला कर सकी। इसका अपनाएक रूहानी मरकज और इलमी सरचश्मा है जिससे उसका गहरा तअल्लुक है। इसकी बुनियाद पर जमाने में मुसलमानों में एकता कायम हो सकती है। इससे जिम्मेदारी का एहसास उभरता है और समाज में इससे फसाद को रोकने और हक व इंसाफ को कायम करने में मदद ली जा सकती है। उम्मत को अब न किसी नये नबी की जरूरत है और न किसी ऐसे "इमाम मासूम" की हाजत जो अंबिया किराम के काम की तकमील करे। और न इस्लामी नशअते सानिया और जदीद दीनी तहरीक के लिए किसी

ऐसी दावत या शखसियत पर एतमाद की जरूरत है जो अक्ल के अहाते में न आये और जिससे सियासी फायदा उठाये जा सकने का अंदेशा हो।

इस दीन की आठवीं खुसूसियत यह है कि अपनी असल हकीकत और ताजगी के साथ बाकी है। इसकी किताब महफूज और हर दौर में समझी जाने वाली है। यह जिस उम्मत के पास है वह गुमराही और किसी साजिश का शिकार हो जाने से महफूज है। कुरआन का यह एजाज और उसके मिनजानिब अल्लाह होने की दलील है कि उसने कुरआन मजीद की सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली सूरः फातेहा में ईसाइयों के लिए "वलज्जालीन" का लकब इस्तेमाल किया। इस लफ्ज का राज वही समझ सकता है जो ईसाइयत की तारीख से अच्छी तरह वाकिफ हो। मसीहीयत अपने इब्तेदायी दौर ही में उस सही रास्ते से हट गई जिस पर हजरत ईसा अलैहिस्सलाम इसको छोड़ कर गये थे। एक ईसाई आलिम अपनी किताब में लिखता है :-

"जिस अकीदा और नेजाम का जिक्र हमें इंजील में मिलता है उसकी दावत हजरत मसीहा अ० ने अपने कौल व अमल से कभी नहीं दी थी। इस वक्त ईसाईयों और यहूदियों व मुसलमानों के बीच जो झगड़ा है उसकी जिम्मेदारी हजरत मसीह अ०के सरपर नहीं है बल्कि यह सब उस यहूदी, ईसाई बेदीन पाल का करिश्मा है और मुकद्दस किताब की तमसील के तरीके पर तशरीह और उसे मिसालों से भर देने का नतीजा है। पाल ने स्टीफेन की तकलीद में जो एसीनियो मजहब का मानने वाला है, हजरत मसीह अ० के साथ बहुत सी बौद्ध रसूम को जोड़ दीं। आज इंजील में जो मुतजाद कहानियां और वाकेयात मिलते हैं और जो हजरत मसीह अ० को उनके मरतबे से हट कर पेश करते हैं वह सब पाल के बनाये हुए हैं। हजरत मसीह अ० ने नहीं बल्कि पाल और उनके बाद आने वाले पादरियों और राहिबों ने इस सारे अकीदा और नेजाम को तरतीब दिया जिसे आर्थोडाक्स मसीही दुन्या ने अट्ठारह सदियों से अपने अकीदा की बुनियाद करार दे रखा है।

अल्लाह तआला का इरशाद है:-

तर्जुमा : "बेशक यह (किताब) नसीहत हमीं ने उतारी है,और हमीं इसके निगहबान हैं।" (सूर : हज्र-६)

इतना ही नहीं यह भी फरमाया गया :-

तर्जुमा : इस (कुर्आन) का जमा करना और पढ़वाना हमारे जिम्मे है, जब हम वही पढ़ा करें तो तुम (इसको सुना करो) फिर इसी तरह पढ़ो फिर इस (के मानी) का बयान भी हमारे जिम्मे है।" (सूर : कयामत -१७-१६)

फिर उस दीन पर भरोसा नही किया जा सकता जिस पर कभी-कभी कुछ दिनों तक अमल किया गया वह पेड़ जो लम्बे समय तक बेहतर से बेहतर मौसम पाने के बावजूद फल न दे भरोसे के काबिल नहीं हो सकता। फिर यह उम्मत सिर्फ इस आसमानी किताब की मुखातब ही नहीं, वह इसके पैगाम को दुनिया में फैलाने में, उसे समझने उस पर अमल की दावत देने और खुद इसका नमूना बनने की भी जिम्मेदार है।

नवीं और आखिरी बात यह है कि इस्लाम को एक साजगार फजा, एक मुनासिब मौसम और माहौल की जरूरत है क्योंकि वह एक जिन्दा इन्सानी दीन है वह कोई अकली और नजरियाती फल्सफा नहीं जो सिर्फ दिमाग के किसी खाने में या किसी कुतुबखाने के किसी कोने में महफूज हो। वह एक साथ अकीदा व अमल, सीरत व अखलाक जजबात व एहसास के झुरमुट का नाम है। वह इन्सान को नये सांचे में ढालता और जिन्दगी को नये रंग में रंगता है। इसलिए अल्लाह तआला इसलाम को "सिबगतुल्लाह" के नाम से याद फरमाता है "सिंबगत" एक रंग और नुमाया छाप को कहते हैं। इस्लाम दूसरे मजाहिब के मुकाबले में ज्यादा हस्सास है। इसके अपने खास हुदूद हैं जिनसे कोई मुसलमाना हट नहीं सकता। किसी दूसरे मजहब में इरतेदाद का वह साफ मफहूम नहीं पाया जाता जो इस्लामी शरीअत में है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हयात तय्यबा, इरशादात व हिदायात आप का उसवये मुबारक और आप की सुन्नत दीन के लिए वह फिजा और माहौल तैयार करते हैं जिसमें दीन का पौधा हराभरा और फलता फूलता है, क्योंकि दीन जिन्दगी के तमाम शरायत व सिफात का मजमूआ है। इसलिए वह पैगम्बर के जजबात व एहसासात, उनकी जिन्दगी के वाकयात और अमली मिसालों के बिना जिन्दा नहीं रह सकता। दीन एक मिसाली और मेआरी माहौल की नजीर के बगैर जिन्दा व शादाब नहीं रह सकता, और यह माहौल हदीस नबवी के जरिये महफूज है। इसलिए अल्लाह ने कुरआन की हिफाजत के साथ हदीस नबवी की भी हिफाजत फरमाई। इसी की बदौलत

हयात तय्यबा की फैज रसानी अभी तक बाकी है। इसी की बदौलत हयात तैयबा की फैज रसानी अभी तक बाकी है। इसी की मदद से उल्माये उम्मत ''मारूफ'' व ''मुन्कर'' ''सुन्नत'' व ''बिदअत'' और ''इस्लाम'' व ''जाहिलियत'' के बीच हर जमाने में फर्क करने के काबिल हुए। उनके लिए यह एक बैरोमीटर की तरह उन की रहनुमाई करती रही। सुन्नत व हदीस के यह मजमूए हमेशा इस्लाह व तजदीद और सही इस्लामी फिक का सरचश्मा रहे हैं। इन्हीं की मदद से इस्लाह का बीड़ा उठाने वालों ने हमेशा शिर्क व बिदअत और जाहिलियत के रसूम को मिटाया और उसकी रद्द की। और तारीख शाहिद है कि जब भी हदीस व सुन्नत की किताबों से इल्मी हल्कों के तअल्लुक और वाकफियत में कमी आयी और दूसरे उलूम में उनका इन्हमाक बढ़ा, मुस्लिम सोसाइटी बासलाहियत लोगों की मौजूदगी में नई नई बिदआत, जाहिली रस्में और गैर मजाहिब के असरात का शिकार हो गई और कभी कभी यह अन्देशा पैदा होने लगा कि वह असभ्य समाज का दूसरा इडीशन न बन जाय।

यह हैं दीन इस्लाम और उसके मेजाज की खास खास बातें जो उसे दूसरे मजाहिब और फल्सफों से मुम्ताज करती हैं एक मुसलमान को इनसे वाकिफ भी होना चाहिए और इनके बारे में उसके अन्दर गैरत व हमीयत भी पाई जानी चाहिए। इसी की मदद से हम हर दौर में हक व बातिल की लड़ाई में सही रास्ते पर कायम भी रह सकते हैं और दीन की खिदमत व हिफाजत की सआदत भी हासिल कर सकते हैं।

नबी की याद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

मर्यम क़ादिरी

न कोई बुलावा न कोई सन्देसा, तैबा से आये
हाय मन मोरा तरसे।
नूरे मदनी की प्रीत मोरे मन में है बसी
न आए वो सरवर सपनों में मोरे
रैना सारी मैं तड़पी।
न कोई बुलावा न कोई सन्देसा, तैबा से आये।
हाय मन मोरा तरसे।
काहे न सुनो अरज मोरी मक्किल मदनी
रूठे हो क्या हम से, काहे न बुलाओ चौखट पे अपनी
प्रीत है मैंने निभाई बनके प्रेम दिवानी
ओ साहिब याद में तेरी हुई मैं बेगानी
न कोई बुलावा न कोई सन्देसा, तैबा से आये
हाय मन मोरा तरसे।
नाम है मोरे होंठों पे सल्ले अला
नयनों में मोरे है पानी भरा
सुनूं जो नाम तोरा, छलक जाए अखियों का पानी मोरा।
न कोई बुलावा, न कोई सन्देसा, तैबा से आये
हाय मन मोरा तरसे।
मोरी धड़कनों में प्रेम तेरा बसा
जाऊं तेरी नगरिया मन में सपना सजा
सुबह की किरने गीत तेरे गाएं।
न कोई बुलावा न कोई सन्देसा, तैबा से आए।
हाय मन मोरा तरसे।
भोर भए पवन कुछ गुनगुनाए
साझ तले विरह की अग्नि में हम जले जाएं
दूर है गुम्बदे खज्रा सोच के हम मर जाएं।
न कोई बुलावा न कोई सन्देसा, तैबा से आये
हाय मन मोरा तरसे।
गगन भी करता तुझसे प्रेम
धरती भी तुझपे मरती प्रीतम
चान्द तारे भी तेरी परतो से चमकें
फिर काहे न बान्धु प्रीत की डोर तुझसे
न कौनू बुलावा न कोई सन्देसा, तैबा से आये
हाय मन मोरा तरसे।

(शेष पृष्ठ ३६ पर)

दसवीं किस्त

सीरतुन्नबी

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

अल्लामा शिबली नोमानी

परहेज़गारी और सन्तोष

योरोप के लेखकों का आम ख्याल है कि आंहजरत सल्ल० जब तक मक्का में थे, पैगम्बर थे, मदीना पहुंच कर पैगम्बर से बादशाह बन गये लेकिन सच बात यह है कि आप तमाम अरब के अधीन हो जाने पर भी फाकःकश रहे। सही बुख़ारी में है कि मृत्यु के समय आप की ज़िरह (कवच) एक यहूदी के यहां तीन साअ जौ पर गिरवी थी। जिन कपड़ों में आप की मृत्यु हुयी उनमें ऊपर तले पैवन्द लगे हुए थे। यह वह जमाना है जब तमाम अरब, सीरिया की सीमा से लेकर अदन तक फतेह हो चुका है और मदीना की धरती में चांदी सोने की बाढ़ आ चुकी है।

इस में सन्देह नहीं कि आप के जरूरी कामों में रहबानियत (सन्यास) का क़ला क़मा करना भी था जिस की निस्बत खुदा ने नसारा को मलामत की थी। इस बिना पर आपने कभी कभी अच्छे खाने और अच्छे कपड़े भी इस्तेमाल किये हैं लेकिन स्वभावतः आपको सांसारिक मायाजाल से दुराव था फरमाया करते आदम की सन्तान को इन चन्द चीजों के सिवा और किसी चीज का हक नहीं, रहने के लिए घर तन ढकने के लिए एक कपड़ा और पेट भरने के लिए रूखी सूखी रोटी और पानी। (तिरमिजी) हजरत आयशा फरमाती हैं कभी आपका कोई कपड़ा तह करने के लिए नहीं रखा गया अर्थात सिर्फ एक जोड़ा कपड़ा होता था दूसरा नहीं होता था जो तह करके रखा जा सकता।

एक दफा हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर घर की दीवार की मरम्मत कर रहे थे, इत्तेफाकन आप किसी तरफ से आ गये, पूछा क्या कर रहे हो? अब्दुल्ला बिन उमर ने अर्ज किया दीवार की मरम्मत कर रहा हूं, इरशाद हुआ कि इतनी मुहलत कहां?

घर में अकसर फाकः रहता था और रात को तो अकसर आप और सारा घर भूखा सो रहता था।

बराबर दो दो महीने तक घर में आग नहीं जलती थी। हज़रत आयशा ने एक मौके पर जब यह वाक़या बयान किया तो उरवा बिन जुबैर ने पूछा कि आखिर गुजारा किस चीज पर था? बोलीं कि पानी और खजूर। अलबत्ता पड़ोसी कभी कभी बकरी का दूध भेज देते तो पी लेते थे। आप ने तमाम उम्र कभी चपाती की सूरत नहीं देखी। मैदा जिस को अरब में हवारी और नकी कहते हैं कभी नजर से नहीं गुजरा। सहल बिन सअद जो इस वाक्या के रावी हैं उनसे लोगों ने पूछा कि क्या आंहज़रत के जमाने में छलनियां न थीं? बोले 'नहीं', लोगो ने फिर पूछा कि आखिर किस चीज से आटा छानते थे, बोले मुंह से फूंक कर मूसी उड़ा देते थे जो रह जाता उसी को गूंध कर पका लेते । हजरत आयशा फरमाती हैं कि तमाम उम्र यानी मदीना के कियाम से वफात तक आप ने कभी दो वक्त सैर होकर रोटी नहीं खाई।

फ़िदक और ख़ैबर आदि के उल्लेख में मुहद्दिसीन और सीरत निगार लिखते हैं कि आप उनकी आमदनी से साल भर का खर्च ले लिया करते थे। यह वाक्या बजाहिर ऊपर बयान की गयी बात से विपरीत मालूम होता है लेकिन वास्तव में दोनों सही हैं। निस्सन्देह आप गुजारे भर को आमदनी में से ले लेते बाकी दीन दुखियों और जरूरतमन्दों को देते थे। लेकिन आप अपने लिए जो रख लेते थे वह भी जरूरतमन्दों के नजर हो जाता था। हदीसों में आप की फाकः कशी और तंगदस्ती की अनेक घटनाएं मौजूद हैं। चन्द रिवायतें इस मौके पर हम दर्ज करते हैं।

एक दफा एक व्यक्ति आपके पास आया कि सख्त भूखा हूं। आपने अपनी पत्नियों में से किसी के यहां कहला भेजा कि कुछ खाने को भेज दो। जवाब आया घर में पानी के सिवा कुछ नहीं। आप ने दूसरे घर कहला भेजा वहां से भी यही जवाब आया। संक्षेप में यह कि आठ नौ घरों में से कहीं पानी के सिवा खाने की कोई चीज न थी।

हजरत अनस का बयान है कि एक दिन आप की खिदमत में हाजिर हुआ तो देखा कि आपने पेट को कपड़े से कस कर बांधा है कारण पूछा तो उपस्थित जनों में से एक साहब ने कहा कि भूख के कारण से।

हजरत अबू तलहा कहते हैं कि एक दिन मैंने अल्लाह के रसूल को देखा कि मस्जिद में जमीन पर लेटे हुए हैं और भूख के कारण बार बार

करवटें बदलते हैं।

एक दफा सहाबः ने आप सल्ल० से फाकःकशी की शिकायत की और पेट खोल कर दिखाया कि पत्थर बांधे थे। आप ने पेट खोला तो एक के बजाय दो दो पत्थर थे।

अक्सर भूख की वजह से आवाज इस कदर कमजोर हो जाती थी कि सहाबः आप की हालत समझ जाते थे। एक दिन अबू तल्हा घर में आये और बीवी से कहा कि कुछ खाने को है? मैं ने अभी अल्लाह के रसूल सल्ल० को देखा कि उनकी आवाज कमजोर हो गई है।

एक दिन भूख में ठीक दोपहर के समय घर से निकले। राह में हजरत अबू बक्र और हजरत उमर रज़ि० दोनों मिले। यह दोनों साहब भी भूख से बेताब थे। आप सब को लेकर हजरत अबू अय्यूब अन्सारी के घर आये। उनकी आदत थी कि आं हजरत सल्ल०के लिए दूध मुहैया रखते थे। आज आप के आने में देर हुई तो उन्होंने बच्चों को खिला दिया। आप सल्ल० उनके घर पहुंचे तो वह नखलिस्तान में चले गये थे। उनकी बीवी को खबर हुई तो वह बाहर निकल आयीं और अर्ज किया हुजूर का आना मुबारक। आप ने पूछा अबू अय्यूब कहां हैं? नखलिस्तान पास ही था, वह आवाज सुनकर दौड़े आये और मरहबा कहकर अर्ज की यह हुजूर के आने का वक्त नहीं। आप ने हालत बयान की। वह नखलिस्तान में जाकर खजूरों का एक गुच्छा तोड़ लाये, और कहा मैं गोश्त तैयार कराता हूं। एक बकरी जबह की। आधे का सालन, आधे के कबाब तैयार कराये। खाना सामने लाकर रखा तो आंहजरत सल्ल० ने एक रोटी पर थोड़ा से गोश्त रखकर फरमाया कि फातिमा को भेजवा दो कई दिन से उसको खाना नसीब नहीं हुआ है। फिर खुद सहाबः के साथ मिलकर खाना खाया। कई तरह के खाने देखकर आंखों में आंसू भर आये और फरमाया कि खुदा ने जो कहा है कि कियामत में नईम से सवाल होगा वह यही चीज है।

अक्सर ऐसा होता कि आंहजरत सल्ल०सुबह को अपनी पाक पत्नियों के पास आते और पूछते कि आज कुछ खाने को है? अर्ज करती नहीं। आप फरमाते अच्छा मैं ने रोजा रख लिया।

क्षमा और सहनशीलता (अफव व हिल्म)

सीरत के लेखकों ने विवेचना की है कि तमाम घटनायें गवाह हैं कि आंहजरत सल्ल० ने कभी किसी से बदला नहीं लिया। हजरत आयशा बयान करती हैं कि आप ने कभी किसी से अपने व्यक्तिगत मामले में बदला नहीं लिया, अलावा इस सूरत के कि उसने अल्लाह के हुक्म की फजीहत की हो।

ओहद की लड़ाई में हार से ज्यादा ताइफ के रईसों के अपमानजनक व्यवहार की याद आप के लिए दुखदायी थी फिर भी दस वर्ष के बाद ताइफ की लड़ाई में जब एक तरफ हथियार से मुसलमानों पर पत्थर बरसाते थे तो दूसरी तरफ एक साक्षात क्षमा व सहनशीलता मनुष्य यह दुआ मांग रहा था कि खुदा या ! इन्हें समझ दे और इन को इस्लाम की दौलत दे। अतएव ऐसा ही हुआ। सन् नौ हिज्री में जब उनका शिष्टमण्डल मदीना आया तो आपने उन को मस्जिद के आंगन में मेहमान उतारा और उनका आदर सत्कार किया।

कुरैश ने आप को गालियां दीं, मारने की धमकी दी, रास्तों में कांटे बिछाये, आप के पवित्र शरीर पर गन्दगी डाली, गले में फन्दा डालकर खींचा, कभी पागल, कभी शायर कहा, लेकिन आपने कभी इन बातों पर बरहमी जाहिर नहीं फरमायी। गरीब से गरीब आदमी भी जब किसी मजमा में झुठलाया जाता है तो वह गुस्सा से कांप उठता है। एक साहब जिन्हों ने आप सल्ल० को एक एक बाजार में इस्लाम की दावत देते हुए देखा था बयान करते हैं कि हुजूर फरमा रहे थे कि लोगो! लाइलाह इल्लल्लाह कहो तो नजात पाओगे। पीछे पीछे अबू जहल था वह आप पर खाक उड़ा उड़ा कर कह रहा था, लोगो ! इस आदमी की बातें तुम को अपने मजहब से विमुख न कर दें। यह, यह चाहता है कि तुम अपने देवताओं को छोड़ दो। बयान करने वाला कहता है कि आप इस हालत में उसकी तरफ मुड़कर देखते भी न थे। (मुसनद अहमद खण्ड चार पृष्ठ ६३)

सब से बढ़कर तैश व गजब का मौका वह वाक्या था जब कि मुनाफिकीन ने हजरत आयशा को अल्लाह की पनाह, तुहमत लगाई थी। हजरत आयशा आप की प्रियतम पत्नी और अबू बक्र जैसे यारेगार और अफजल सहाबः की बेटी थीं शहर मुनाफिकों से भरा पड़ा था जिन्होंने दम भर में इस खबर को इस तरह फैला दिया कि सारा मदीना गूंज उठा, दुश्मनों का इस खबर पर खुश होना, नामूस की बदनामी, प्रियतम की फ़ज़ीलत यह बातें इन्सानी धैर्य को आसानीसे तोड़ सकतीं हैं, ताहम रहमते आलम ने इन सब बातों के साथ क्या किया। तुहमत का तमामतर बानी मुनाफिकीन का चौधरी अब्दुल्लाह बिन उबइ था और आप यह

बात अच्छी तरह जानते थे। फिर भी आपने सिर्फ इतना किया कि आम मजमा में मेंबर पर खड़े होकर फरमाया, "मुसलमानों! जो आदमी मेरी इज्जत से खिलवाड़ करता है, मुझ को सताता है उससे मेरी दाद कौन ले सकाता है। हजरत सअद बिन मआज गुस्सा से बेताब हो गये और उठ कर कहा मैं इस खिदमत के लिए हाजिर हूं, आप नाम बतायें तो उस का सर उड़ा दूं। सअद बिन एबादा ने जो अब्दुल्ला बिन उबइ के साथ थे, विरोध जताया और इस पर दोनों तरफ से हिमायती खड़े हो गये। करीब था कि तलवारें खिंच जायें। आप ने दोनों को ठंडा किया। घटना को खुदा ने झुठला दिया और तुहमत लगाने वालों को शरअई सजा दी गई, ताहम अब्दुल्लाह बिन उबइ इस बिना पर छोड़ दिया गया कि उस को तुहमत लगाने का इकरार न था, और सबूत के लिए शरअई शहादत मौजूद न थी। तुहमत लगाने वालों में जिन को सजा दी गई एक साहब मुसत्तह बिन असासा थे, उनके गुजार की जिम्मेदारी हजरत अबू बक्र पर थी। तुहमत लगाने के जुर्म में हजरत अबू बक्र ने उस का रोजीना बन्द कर दिया। इस पर यह आयत उतरी :

तर्जुमः तुम में से जो लोग फजीलत और कुशादगी वाले हैं, ऐसे लोगों को इस बात की कसम न खानी चाहिए कि फलां रिश्ते नाते वालों की, मिस्कीनों की और अल्लाह की राह में हिजरात करने वालों की अब मदद ने करेंगे बल्कि तुम को चाहिए कि उन को माफ कर दें और दरगुजर कर दें, क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम को बख्श दे। खुदा गफूर व रहीम है। (सूर : नूर – २२)

और हजरत अबू बक्र ने उनका रोजाना बदस्तूर जारी कर दिया।

तुहमत लगाने वालों में हजरत हस्सान भी थे। हजरत आयशा को उनसे जो रंज था वह क्षमा की सीमा से परे था। लेकिन यह आंहजरत सल्ल० के स्नेह का असर था कि ओरवह बिन जुबैर ने हजरत आयशा के सामने हजरत हस्सान को बुरा कहना शुरू किया तो हजरत आयशा ने रोक दिया कि यह (हस्सान) आंहजरत सल्ल० की तरफ से कुफ्फार को जवाब देते थे। (बुखारी)

मदीना के मुनाफिक यहूदियों में से लुबैद बिन आसिम ने आप पर जादू किया, फिर भी आपने बुरा न माना। हजरत आयशा ने और छानबी की बात कही तो फरमाया मैं लोगों में शोरिस (फसाद) नही पैदा करना चाहता)। (बुखारी)।

जैद बिन सअना जिस जमाने में यहूदी थे, लेन देन का कारोबार करते थे। आं हजरत सल्ल० ने उन से कुछ कर्ज़ लिया। अदायगी की मीयाद में अभी कुछ दिन बाकी थे। तकाजे को आये। आप सल्ल० की चादर पकड़ कर खींची और सख्त सुस्त कहकर कहा, अब्दुल मुत्तलिब के खानदान वालों! तुम हमेशा यूंही हीले हवाले किया करते हो। हजरत उमर गुस्सा से बेताब हो गये। उस को सम्बोधित करके कहा, ओ खुदा के दुश्मन! तू अल्लाह के रसूल की शान में गुस्ताखी करता है। आंहजरत ने मुस्करा कर फरमाया, उमर! तुम से कुछ और उम्मीद थी। उस को समझाना चाहिए था कि उसको नर्मी से तक़ाज़ा करे और मुझसे यह कहना चाहिए कि मैं इसका कर्ज़ अदा कर दूं। यह फरमा कर हज़रत उमर को इरशाद फरमाया कि कर्ज़ा अदा कर के बीस सआ खजूर के और ज्यादा दे दो।

एक दफा आप के पास सिर्फ एक जोड़ा कपड़ा रह गया था और वह भी मोटा और गन्दा था, पसीना आता तो और भी बोझल हो जाता। इत्तेफाक से एक यहूदी के यहां सीरिया से कपड़े आये हजरत आयशा ने अर्ज की कि एक जोड़ा उससे कर्ज मंगवा लीजिए। आंहजरत सल्ल० ने यहूदी के पास आदमी भेजा। उस गुस्ताख ने कहा मैं समझा मतलब यह है कि मेरा माल यूं ही उड़ालें और दाम न दें। आंहजरत सल्ल० ने यह नागंवार जुमले सुनकर सिर्फ इतना कहा कि वह खूब जानता है कि मैं सबसे ज्यादा एहतियात बरतने वाला और सबसे ज्यादा अमानत का अदा करने वाला हूं।

एक दफा कहीं तशरीफ ले जा रहे थे। एक औरत कब्र के पास बैठी रो रही थी। आप रूक गये और उसे सम्बोधित कर के कहा, सब्र करो। वह आपको पहचानती न थी। (गुस्ताखी के साथ बोली) हटो तुम क्या जानते हो कि मुझ पर क्या गुजरी है? आप चले आये। लोगों ने औरत से कहा तूने नहीं पचहाना वह अल्लाह के रसूल थे। वह दौड़ी हुई आई और कहा मैं हुजूर को पहचानती न थी। इरशाद फरमाया सब्र वही असली है जो ऐन मुसीबत के वक्त किया जाये। (बुखारी)

एक दफा हज़रत सअद बिन एबादा बीमार हुए। आप अयादत को सवारी पर तशरीफ ले गये। राह में एक जलसा था। आप ठहर गये। अब्दुल्लाह बिन अबी जो मुनाफिकीन का सरदार था वह भी जलसा में मौजूद था। आपकी सवारी की गर्द उड़ी तो उसने चादर नाक पर रख ली और

आप सल्ल० से कहा, देखो, गर्द न उड़ाओ। जब आप करीब पहुंचे तो उसने कहा मुहम्मद! अपना गधा हटाओ। तुम्हारे गधे की बदबू ने मेरा दिमाग परेशान कर दिया। आं हजरत ने सलाम किया, फिर सवारी से उतरे और इस्लाम की दावत दी अब्दुल्ला बिन अबी ने कहा, हमारे घर आकर हम को न सताओ। जो आदमी स्वयं तुम्हारे पास आये उस को तालीम दो। अब्दुल्लाह बिन रवाहः जो मशहूर शायर थे, उन्होंने कहा, आप जरूर तशरीफ लाइये। बात बढ़ते बढ़ते यहां तक पहुंची कि करीब था तलवारें निकल आयें। आंहजरत सल्ल० ने दोनों फरीक को समझा बुझा कर ठंडा किया। जलसा से उठकर आप सद बिन एबादा के पास आये और उन से कहा, तुमने अब्दुल्ला की बातें सुनीं। सअद बिन एबादा ने अर्ज किया कि आप कुछ ख्याल न फरमायें। यह वह व्यक्ति है कि आप के आने से पहले मदीना वालों ने इसके लिए रियासत का ताज तैयार कर लिया था।

ग़ज़वए हुनैन में आपने माले ग़नीमत तकसीम फरमाया तो एक अन्सारी ने कहा, यह तकसीम (बांट) खुदा की रजामन्दी के लिए नहीं है। आपने सुना तो फरमाया, खुदा मूसा पर रहम करे उन को लोगों ने इस से भी ज्यादा सताया था। (बुखारी)

एक दफा एक बद्दू आपके पास आया। आप मस्जिद में तशरीफ रखते थे। उसे पेशाब लगी। मस्जिद के आदाब से वाकिफ न था। वहीं खड़े होकर पेशाब करने लगा। लोग हर तरफ से दौड़ पड़े कि उसको सजा दें। आपने फरमाया, जाने दो और पानी का एक डोल लाकर बहा दो। खुदा ने तुम लोगों को दुश्वारी के लिए नहीं बल्कि आसानी के लिए भेजा है। (बुखारी)

हजरत अनस जो खादिमे खास थे उनका बयान है कि एक दफा आप सल्ल० ने मुझ को किसी काम के लिए भेजना चाहा, मैं ने कहा, न जाऊंगा। आप चुप रह गये। मैं यह कह कर बाहर चला गया। अचानक आंहजरत सल्ल० ने पीछे से आकर मेरी गर्दन पकड़ ली। मैंने मुड़कर देखा तो आप हंस रहे थे, फिर प्यार से फरमाया, 'अनस ! जिस काम के लिए कहा था, अब तो जाओ।' मैं ने अर्ज किया अच्छा जाता हूं। अनस ने इसी वाक्या के साथ बयान किया कि मैं ने सात वर्ष आप की मुलाजिमत की, कभी यह न फरमाया कि तुम ने यह काम क्यों किया या यह क्यों नहीं किया । (मुस्लिम)

हजरत अबू हुरैरः कहते हैं कि आप की आदत थी कि हम लोगों के साथ मस्जिद में बैठ जाते और बातें करते। जब उठकर घर में जाते तो हम लोग भी चले जाते। एक दिन यथा समय मस्जिद से निकले। एक बद्दू आया और उसने आप की चादर इस जोर से पकड़ कर खींची कि आप की गर्दन सुर्ख हो गई। आपने मुड़कर उस की तरफ देखा। बोला कि मेरे ऊंटों को गल्ला से लाद दे, तेरे पास जो माल है न तेरा है, न तेरे बाप का है। आप ने फरमाया, पहले मरी गर्दन का बदला दो, तब गल्ला दिया जायेगा वह बार बार कहताथा कि खुदा की कसम। मैं हरगिज बदला न दूंगा। आपने उसके ऊंटों पर जौ और खजूरें लदवा दीं और बुरा न माना।

कुरैश (अल्लाह की पनाह) आंहजरत सल्ल० को गालियां देते थे, बुरा भला कहते थे। जिद से आप को मुहम्मद (तारीफ किया गया) नहीं कहते थे, बल्कि मुजम्मम (मजम्मत किया गया) कहते थे। लेकिन आप इस के जवाब में अपने दोस्तों को खिताब करके सिर्फ इस कद्र फरमाया करते थे कि तुम्हें तअज्जुब नहीं आता कि अल्लाह तआला कुरैश की गालियों को मुझ से क्योंकर फेरता है, वह मुजम्मम को गालियां देते हैं और मुजम्मत पर लानत भेजते हैं और मैं मुहम्मद हूं । (मिशकात)।

जिस जमाने में आप फतेह मक्का के लिए तैयारियां कर रहे थे, इस बात की खास एतहियात फरमा रहे थे कि कुरैश को हमारे इरादों की खबर न हो। हातिब बिन बलतआ एक सहाबी थे उन्हों ने चाहा कि कुरैश को इसकी सूचना कर दें। अतएव एक खत लिखकर उन्होंने चुपके से एक औरत की मारफत मक्का रवाना किया। आप को इसकी खबर हो गई। हजरत अली और हजरत जुबैर उसी वक्त भेजे गये जो कासिद को खत के साथ गिरफतार कर लाये। हातिब को बुलाकर पूछा तो उन्होंने साफ साफ अपना कसूर स्वीकार किया और माफी चाही। एक मौका था कि हर सियासतदां मुज्रिम की सजा का फतवा देता, लेकिन आंहजरत सल्ल० ने इस लिए उन को माफ फरमाया कि वह बद्र में शरीक होने वालों में से थे। औरत जो इस जुर्म में शरीक थी उसको भी कुछ बुरा भला ना कहा, हालांकि यह खत अगर दुश्मनों तक पहुंच जाता तो मुसलमानों को सख्त खतरात का सामना हो जाता।

फरात बिन हयान एक व्यक्ति था । अबू सुफियान की तरफ से मुसलमानों की जासूसी पर लगाया गया था। आंहजरत सल्ल० की बुराई में शेर कहा करता था। एक दफा वह पकड़ा गया तो आप सल्ल० ने उसके कत्ल का हुक्म दिया। लोग उसको पकड़ कर ले चले जब अन्सार के एक

(शेष पृष्ठ ५ पर)

बारहवीं किस्त

संक्षिप्त इस्लामी इतिहास

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी

हज़रत इमाम हसन रज़िअ़ल्लाहु अन्हु

हज़रत अ़ली (रज़ि०) के देहान्त के बाद इराक के लोगों ने आप के बड़ें पुत्र हजरत इमाम हसन रज़ि० के हाथ पर बैअत कर ली। हजरत इमाम हसन रज़ि० बड़े नेक और नर्म स्वभाव के थे। लड़ाई झगड़े को सख्त नापसन्द करते थे। अमीर माअ़विया रज़ि० उनकी नेकी को समझते थे। इसलिए उनकी बैअ़त के बाद सारे देश पर कब्जा कर लेना चाहा। हजरत हसन रज़ि० अपनी हुकूमत के लिए मुसलमानों में झगड़ा फसाद नहीं चाहते थे। इसलिए उन्होंने तुरन्त हजरत मअ़विया रज़ि० से सुलह कर ली और सारे मुल्क की हुकूमत उनको सौंप दी।

रबीअऔवल (बारहवफात) स० ४१ हि० को यह सुलहनामा हुआ और बहुत दिनों के बाद मुसलमान फिर एक झण्डे के नीचे आ गये। इस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पेशिनगोई (भविष्यवाणी) पूरी हुई कि 'मेरा बेटा सय्यद है। आशा है कि अल्लाह तआला उसके जरिये मुसलमानों के दो बड़े गिरोहों में सुलह करा देगा।

बनी उमय्या की खिलाफत हज़रत मुआविया रज़ियल्लाह अनहु

देश का शासन : हज़रत इमाम हसन रज़ि० से सुलह के बाद खिलाफत पूरी तरह से हजरत माअविया रज़ि० के हाथ में आ गई और बहुत दिनों तक आप ही के खान्दान में रही। २५ रबी अव्वल (बारहवफात) सन् ४१ ह० को आप के हाथ बैअ़त हुई और मुद्दत के बाद मुसलमान फिर एक झण्डे के नीचे आ गए। आप बहुत योग्य और समझदार बादशाह हुए हैं और प्रजा के साथ बड़ी महब्बत और नर्मी करते थे। जब तक बिल्कुल मजबूर न हो जाते कदापि किसी को सजा न देते थे। आप की इसी नीति और उपाय से देश में शान्ति थी।

इराक में अलबत्ता आएदिन झगड़े बखेड़े होते रहते थे पहले आपने चाहा कि नर्मी से काम चले तो अच्छा है। लेकिन इराकियों के बारे में तो मालूम ही है कि वह कैसे उत्पाती थे जैसी जैसी उनके साथ रियात होती और जिस जिस तरह उन्हें तरह दी जाती वैसे ही वैसे और उत्पाती होते जाते अन्ततः जब किसी तरह काम न चला तो हजरत माअविया (रज़ि०) ने ज्याद को यहां का हाकिम बना कर भेजा ज्याद ने बसरा पहुंचकर एक सख्त तकरीर की और कहा :–

"हर शख्स को चाहिए कि अपने घर और खान्दान के लोगों को बुराई से रोके नहीं तो गुनाहगार के बदले बेगुनाह को भी सजा दूंगा, भागने वाले के बदले मौजूद को पकडूंगा। रात को बाहर फिरने वाले को कत्ल कर दिया जाएगा। जो किसी के घर को आग लगाएगा मैं खुद उसे जला दूंगा। जो किसी के घर मं सेन्ध काटेगा मैं उसका दिल चीर डालूंगा। कफन घसीटों को उसी कब्र में जिन्दा गाड़ दूंगा। अगर जाहीलियत (मूर्खता) की कोई बात किसी की जबान से निकली तो उसकी जबान काट कर फेंक दूंगा।"

ज़्यादा ने केवल तकरीर ही नहीं की बल्कि उस पर पूरा पूरा अमल किया। नतीजा यह हुआ कि चन्द ही दिनों में सारे उत्पात दबगए और यह हालत होगई कि मकानों और दुकानों के दरवाजे खुले रहते लेकिन क्या मजाल कि कोई आंख उठा कर भी देख ले। सड़क पर किसी की कोई चीज गिर जाती तो उसी पर पड़ी रहती। खारजियों की शक्ति भी लगभग समाप्त हो चुकी थी।

फ़तूहात (विजय)

हजरत माअविया (रज़ि०) के जमाने में रूमियों से कई लड़ाईयां हुईं जिन में मुसलमानों को फतह हुई। आखिर में कुस्तुंतुन्या पर जबरदस्त हमला किया गया लेकिन सफलता नहीं मिली।

अफरीका का प्रबन्ध अकबा बिन नाफअ़ को सौंपा गया और उन की कोशिशों से लगभग सारा बरबरी इलाका मुसलमानों के कब्जे में आ गया और मिस्र से लेकर मराकश तक इस्लामी झण्डा लहराने लगा। यहां उन्होंने क़ैरवान आबाद करके फौजी छावनी कायम की। अकबा की हिम्मत का यह

हाल था कि जब फतह करते करते आन्ध्र महासागर के किनारे पहुंच गए तो समुद्र में भी घोड़े दौड़ा दिए लेकिन जब आगे पानी ही पानी नजर आया तो रूक गए और फरमाया।

"ऐ अल्लाह यह समुन्दर रोकता है नहीं तो जहां तक जमीन मिलती तेरी राह में लड़ता चला जाता।

वलीअहदी (उत्तराधिकारी)

अमीर माअविया रज़ि० खिलाफत राशिद का तरीका समाप्त करके बादशाहत कायम करना चाहते थे। इसलिए जब उनकी उम्र आखिर होने को आई तो मोगीरः बिन शाअबः की राय से अपने लड़के यजीद को वली अहद (उत्तराधिकारी) बनाकर बैअत (भक्तिपत्र) लेनी शुरू कर दी लेकिन अभी देश में यजीद से बहुत अधिक अच्छे लोग मौजूद थे। इसलिए बाज बुजुर्गों ने इसे पसन्द नहीं किया। हजरत इमाम हुसैन (रज़ि०) हजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि०) हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०), हजरत अब्दुर्रहमान बिन अबू बकर (रज़ि०) और हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) ने सख्त विरोध किया कि इस्लाम की लोकतांत्रिक आत्मा मिट जाएगी और भविष्य में शख्सी हुकूमत (वैयक्तिक शासन) की बुन्याद पड़ जाएगी।

इसमें कोई सन्देह नही कि इन बुजुर्गों की यह राय सही थी। इस से इस्लाम को ऐसा सख्त धचका लगा कि आज तक संभलना नसीब न हुआ। लेकिन उस समय कठिनाई यह थी कि बनी उमैया कि शक्ति बढ़ गई थी और वह सारे देश पर छाए हुए थे। इसलिए उनके विरूद्ध कुछ करना सम्भव न था। हजरत मुगीरः बिन शअबः (रज़ि०) और हजरत माअविया (रज़ि०) इन हालात को खूब समझते थे। उन्हें अच्छी तरह मालूम था कि बनी उमय्या ने बड़ी मेहनत से सलतनत हासिल की है और अब किसी तरह से अपने खान्दान से बाहर न जाने देंगे। इन सब बातों को सोच कर उन्होंने यही राय कायम की कि यजीद ही को खलीफा बनाना चाहिए।

दूसरी तरफ यह भी सत्य था कि इस से शख्सी हुकूमत (वैयक्तिक शासन) की बुन्याद पड़ रही थी और साफ नजर आ रहा था कि इस्लाम का वह जमहूरी निजाम (लोकतांत्रिक शासन) जिसने चन्द ही दिनों में दुन्या की कायापलट दी थी और दमके दम में अरब के बद्दुओं को कैसर व कसरा के महल में ले जाकर खड़ा कर दिया था अब हमेशा के लिए समाप्त हो रहा है। हजरत इमाम हुसैन रज़ि० और उनके दोस्तों का भी यही विचार था। जिस के कारण उन्होंने इस परस्ताव का कठोर विरोध किया और इस राह में अपनी जान तक की बाजी लगा दी।

बहरहाल इन बुजुर्गों के अतिरिक्त दूसरे लोगों ने किसी न किसी तरह बैअत कर ली। इसके बाद स० ६० हि० में हजरत माअविया रज़ि० का स्वर्गवास हो गया।

अनुवाद -- हबीबुल्लाह आजमी

आज़ाद और नेहरू

लगभग तीस साल हुए जब मैं ज़िन्दगी में पहली बार मौलाना आजाद से मिला। मैं उनके बारे में सुनता रहता था। राष्ट्रीय समस्याओं के हल में उनकी दिलचस्पी और उनके संकल्प व दृढ़ता (अज़्म व सबात) की सूचना भी मुझको मिलती रहती थी। प्रथम महायुद्ध के दौरान उनकी कलम से निकलने वाले लेखों को मैं पढ़ता रहता था लेकिन बहुत दिनों तक मिलने की नौबत न आई।

मौलाना आजाद उस समय जवान थे लेकिन चिन्तन और विचार के चिन्ह उनके ललाट पर चमकते थे। यही कारण था कि कांग्रेस के मार्गदर्शकों के मण्डल में उनकी अहमियत (महत्ता) प्रमाणित हो चुकी थी। मैं उस समय तक कांग्रेस का सदस्य नहीं था। इसलिए उन से मिलने और परिचय का स्वभाग्य भी प्राप्त नहीं था लेकिन दूर ही से उन से परिचय प्राप्त करने की कोशिश करता रहता था। जब मैं कांग्रेस का सदस्य बन गया तो उस महान व प्रतापवान व्यक्ति (शख़सियत) को पहचानने का औसर मुझे बराबर मिला। आखिर दिनों में तो हमारे दर्मियान एखलास व मुहब्बत (निस्वार्थता व प्रेम) का रिश्ता बहुत मजबूत हो गया था। कांग्रेस के मामिलात उस के प्रस्ताव और राजनीतिक दस्तावेजों पर गौर और चिन्तन में मौलाना बहुत अच्छे साथी और मददगार थे। उन्होंने यह साथ हमेशा निभाया।

कांग्रेस बल्कि हिन्दुस्तान के इतिहास में कम लोगों को मालूम होगा कि कांग्रेस नें जो प्रस्ताव और निर्णायक फैसले प्रकाशित किये उनमें मौलाना की महारत और उनके चिन्तन व विचार की गहराई को बड़ा दखल था।

नेहरू

(पृष्ठ ४ का शेष)

उस भाग की ओर ले आए जिस में दुन्या वालों के लिए बरकतें रखी हैं।

(देखें सूरे नम्बर २१ की आयतें ५१–७१)

इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की यह बड़ी परीक्षा थी पवित्र क़ुर्आन में यह घटना विभिन्न रूपों में बयान हुई है और अन्य कई परीक्षाओं का उल्लेख है, नक्षत्रों चन्द्रमा और सूर्य पूजकों से भी वार्तालाप रही, सम्राट नमरूद से भी वाद विवाद रहा आप हर अवसर पर सत्य पर सुदृढ़ रहे। पिता जी से भी बात हुई । यहां तक कि उन को छोड़ना पड़ा वह अपनी पत्नी और भतीजे लूत के साथ फ़िलिस्तीन आ गये। मार्ग में एक अत्याचारी राजा से भेंट हुई, ईशकृपा से उसका अत्याचार चल न सका अपितु उसने अपनी एक दासी (हाजिरा) को उपहार में दिया बैतुल मुक़द्दस में जब आप ८६ वर्ष के हो गये हाजिरा ने एक बच्चे को जन्म दिया इस्माईल नाम रखा गया अब फिर परीक्षा हुई ईश्वरी आदेश हुआ कि इस बेटे और उसकी मां को मक्का में छोड़ आओ जहां उस समय सूखे पहाड़ों के सिवा कुछ न था आप ने आज्ञापालन किया, मां को जब ज्ञात हुआ कि ईश्वरी आदेश पर ऐसा किया गया है तो वह सन्तुष्ट हो गईं लेकिन जब थैले की खजूरें और लाया हुआ पानी समाप्त हुआ तो व्याकुल हुईं बच्चे को धरती पर डाल सफ़ा पहाड़ी पर चढ़ गईं कि कहीं पानी या कोई मानव दिखे, कुछ न दिखा, सफ़ा से मरवा पहाड़ी की ओर लपकीं, बीच में नीचा था पुत्र ओझल हो गया, दौड़ पड़ीं, मर्वा पहाड़ी, पर चढ़कर बेटे पर नज़र डाली और इधर उधर नज़र दौड़ायी कुछ नज़र न आया फिर सफ़ा पर आईं इस प्रकार सात चक्कर लगाए हर बार नीचे वाले स्थान पर दोड़कर ऊंचाई पर चढ़कर पुत्र पर निगाह डालतीं, अंततः निराश होकर बेटे के पास आईं अरे यह क्या! बेटे के पगों के निकट धरती से पानी उबल रहा था, पानी की समस्या का समाधान हुआ वहीं पानी पी पी कर और ईश्वर ने जो भी खिलाया हो खाकर इस्माईल बड़े हुए, दौड़ने खेलने लगे, इब्राहीम (अ़०) का आगमन हुआ, बेटे से मिलकर प्रसन्न हुए कुछ दिन साथ रहे। एक रात स्वप्नानुसार बेटे को साथ लेकर मिना चल दिये, छुरी और रस्सी साथ थी, शैतान ने तीन स्थानों पर बहकाया इब्राहीम (अ़०) ने कंकरियां मार कर उसे भगाया और बेटे को स्वपन बताया आगे पवित्र क़ुर्आन का बयान पढ़िये –इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने बेटे से कहा : बेटे मैंने स्वप्न में देखा है कि मैं तुझे ज़ब्ह़ (वध) कर रहा हूं। (बेटा भी तो पैग़म्बर बाप का था, जानता था कि पैग़म्बर का ख़्वाब सच्चा होता है) बोला अब्बा जान आप को जो आदेश मिल रहा है उस का पालन कीजिए आप इन्शा अल्लाह मुझे धैर्यवान पाएंगे अंततः जब दोनों इस पर सहमत हो गये और इब्राहीम (अ़०) ने बेटे को माथे के बल गिरा दिया(ताकि आंखें चार न हो और फिर छुरा चला दी और फ़िरिश्ते तक कांपने लगे तो ईश्वर कहता है) हमने आवाज़ दी : ऐ इब्राहीम तुम ने अपना स्वप्न सच कर दिखाया हम नेकी करने वालों को इसी प्रकार बदला देते हैं। यह अति प्रत्यक्ष परीक्षा थी। (ईश्वर कहता है) हम ने एक बड़ी कुर्बानी (अर्थात जन्नती मेंढा) इस्माईल के बदले में दिया। (जिसे इब्राहीम (अ़०) ने ज़ब्ह़ किया अल्लाह की रह़मतें और बरकतें हों इब्राहीम पर और इस्माईल पर) (देखिये सूरे नबर ३६ की आयतें १०२ से १०७ तक) थी ना यह अदभुत परीक्षा?

अल्लाह ही ने यह परीक्षा रची और उसी ने अपनी कृपा से अपने प्रिय परीक्षार्थी को सफलता दी और इस अदभुत घटना की याद क़ियामत तक बाक़ी रखने के लिए अपने अंन्तिम संदेष्टा की उम्मत के मालदारों पर क़ुर्बानी अनिवार्य की तथा मालदारों पर ह़ज्ज फ़र्ज़ कर के इस अदभुत परीक्षा के बहुत से कार्यों को ह़ज्ज में करना अनिवार्य किया। हम अल्लाह की क़ुदरत (सामर्थ्य) और उसकी ह़िकमतों और उसके सभी गुणों पर विश्वास रखते हैं और उसके सभी नबियों पर सलाम भेजते हैं और अल्लाह तआ़ला से उन सब पर रह़मत की प्रार्थना करते हैं।

एक पत्र का उत्तर

मर्यम क़ादिरी साहि़बा !

व अ़लैकुमुस्सलाम ! आप का बहुत बहुत शुक्रिया, आप की शिकायत सर आंखों, उर्दू शब्दों के लिये दिसम्बर ०५ का मेरा सम्पादकीय देखें। कठिन लिखने वालों से हम बराबर सरल लिखने का अनुरोध करते रहते हैं। आप ने जिसे नअ़त कहा है वह नअ़त तो नहीं है भाखा (भाषा) और हिन्दी मिश्रित विरह राग है। जो भावनाओं और अल्लासों से परिपूर्ण है। इसे हम "नबी की याद" के नाम से छाप रहे हैं।

–सम्पादक

नबीये अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

बशरीयत व अ़ब्दीयते रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)

अपनी मुक़द्दस हस्ती के बाब में उम्मत को ग़ुलू और मुबालग़ा से बाज़ रखने के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ईसाइयों ने जिस तरह ईसा इब्नि मर्यम को हद से बढ़ाया तुम मुझे हद से न बढ़ाना मैं तो बस उसका बन्दा हूं तुम मुझे अल्लाह का बन्दा और रसूल ही कहना। (बुख़ारी व मुस्लिम)

दूसरी जगह फ़रमाया :

मुझे मेरे ह़क़ से ऊपर न उठाना क्योंकि अल्लाह ने मुझे रसूल बनाने से भी पहले बन्दा बनाया है। (कन्ज़ुल उम्माल जिल्द १ सफ़ह २२)

एक मौक़िअ़ पर जब कुछ सहाबा से अ़क़ीदत के ज़ाहिर करने में कुछ चूक हो गई तो आपने फ़रमाया :

लोगो! शैतान तुम को गुमराह न कर दे, मैं अ़ब्दुल्लाह का फर्ज़न्द हूं, अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल हूं मैं इसको पसन्द नहीं करता कि तुम मुझे मेरे उस मर्तबे से ऊपर उठाओ जिस पर अल्लाह तआ़ला ने मुझे रखा है। (मुस्नद इमाम अहमद, बैहक़ी–कन्ज़ुल उम्माल जि०२ सफ़ह १३३)

अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को हुक्म दिया कि सब को अपनी बाबात ख़बर दे दो कि मैं तुम्हारी ही तरह बशर हूं, फ़रमाया

"कह दो, मैं तुम्हारी ही तरह एक आदमी हूं, मुझे वही आती है कि तुम्हारा मअ़बूद बस एक ही मअ़बूद है (सूरतुल कहफ़: १८)

क़ुर्आने मजीद की इक्तालीसवीं सूरत हा मीम सज्दा की आयत ६ में भी यही बताया गया है।

सहाब–ए–किराम (रज़ि०) से भी हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम ने यही फ़रमाया कि मैं भी तुम्हारे ही मिस्ल बशर हूं, ह़दीस शरीफ़ में है :

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि०) से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ज़ुह्र की नमाज़ पांच रकअ़त पढ़ा दी, अ़र्ज़ किया गया : क्या नमाज़ में इज़ाफ़ा हो गया? हुज़ूर ने पूछा क्या बात है? सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर ने पांच रकअ़त नमाज़ पढ़ी है। हुज़ूर ने सलाम फेरने के बाद दो सज्दे किये। और (बुख़ारी की) एक रिवायत में यह है कि हुज़ूर ने यह भी फ़रमाया, कि मैं भी तुम्हारी तरह बशर हूं भूलता हूं जैसे तुम भूलते हो तो जब मैं भूला करूं तो मुझे याद दिला दिया करो। (वाज़िह रहे शुरूअ़ में नमाज़ में ज़रूरत की बात पर रोक न थी बाद में रोक हो गई। अनुवादक)

ऊपर नक़्ल होने वाली आयत और ह़दीस से हुज़ूर का बशर होना सरीह़न साबित है, इस यक़ीनी हद तक कि इस तरह़ की आयत व अह़ादीस का इ़ल्म ह़ासिल होने के बअ़द आपकी बशरीयत का इन्कार कुफ़्र होगा, लेकिन इसी के साथ इस अटल ह़क़ीक़त पर ईमान रखना भी ज़रूरी है कि हुज़ूरे अकरम के हमारे मिस्ल होने का यह मौ० मुहम्मद आरिफ संभली नदवी मतलब हरगिज़ नहीं कि आप हर लिह़ाज़ और हर पहलू से हमारे ही जैसे बशर थे। हरगिज़ हरगिज़ यह मतलब नहीं हो सकता, बल्कि हमारे मिस्ल होने का मतलब फ़क़त यह है कि जिस तरह़ कोई बात हमारे अन्दर ख़ुदाई की नहीं इसी तरह़ हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के अन्दर भी नहीं थी, बाकी रहा मर्तबे और ह़ैसियत का फ़र्क़ तो ज़ाहिर बात है कि आप नबी और सय्यिदुल अंबिया हैं और हम आप के उम्मती हैं और क़ियामत के रोज़ आप की शफ़ाअ़त के मुह़ताज। जब यह और ऐसी बहुत सी ह़क़ीक़तें बिल्कुल खुली हुई हैं तो रसूले ख़ुदा (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से बराबरी के वसवसे (ख़याल) का अ़क़ीदा खुला हुआ पागल पन ही समझा जाएगा, सारी मख़्लूक़ से आप अफ़ज़ल और ख़ुदा का सबसे ज़ियादा महबूब व मुकर्रम होना पिछले अंक में बयान हो चुका।

नबी–ए–पाक के अन्दर ख़ुदाई क़ुद्रत का न होना।

मुश्रिकों का हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से मुतालबा था कि अगर वाकई आप नबी हैं तो आप हम पर अ़ज़ाब नाज़िल कर दीजिए, उनके इस मुतालबे का जो जवाब अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूरे अक्दस (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से दिलवाया वह यह है :

अनुवाद : कह दो मैं अपने रब की अज़ीमुश्शान दलील पर क़ाइम हूं और तुम ने उसे झुठलाया है, और

जिस अ़ज़ाब के जल्द लाने का तुम मुझ से मुतालबा कर रहे हो वह मेरे पास नहीं है। ह़ुक्म तो बस अल्लाह का चलता है, वह ह़क़ बयान करता है और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। और यह भी कह दो कि जिस चीज़ की तुम मुझ से जल्दी मचा रहे हो वह चीज़ अगर मेरे कब्ज़े में होती तो मेरे तुम्हारे बीच (कब का) फ़ैसला हो चुका होता, और अल्लाह ज़ालिमों को सब से ज़ियादा जाननेवाला है। (वह जो चाहे उनके साथ मुआ़मला करेगा।) (सूरतुलअन्आ़म : ५८)

मुशरिकीन अपने फ़रमाइशी मुअ्जिज़े दिखाने का भी आप से मुतालबा किया करते थे। ह़ुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को ख़याल हुआ कि अल्लाह तआ़ला अगर उनके फ़रमाइशी मुअ्जिज़े दिखला दे तो शायद वह ईमान ले आएं मगर ख़ुदा की मर्ज़ी यह न थी। इस मौक़िअ़ पर आयत नाज़िल हुई।

अनुवाद : हमें मअ़्लूम है कि उन की बातें तुम्हें रंज पहुंचाती हैं तो वह तुम्हें नहीं झुठलाते लेकिन यह ज़ालिम अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं और तुम से पहले भी रसूल झुठलाए जा चुके हैं पस उन्होंने झुठलाए जाने और सताए जाने पर सब्र किया यहां तक कि उन को हमारी मदद पहुंची और अल्लाह की बातों को कोई बदल नहीं सकता और तुम्हारे पास तो रसूलों की ख़बरें आ ही चुकी हैं। (अल–अनआ़म : ३३, ३४)

यहां तक तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के लिए दिलासा और तसल्ली की बात थी, उसके बाद इर्शाद हुआ : और अगर उन की बेरूख़ी तुम पर गरां हैं तो अगर तुम से हो सके तो ढूंढ निकालो कोई सुरंग ज़मीन में या कोई सीढ़ी आसमान में फिर ले आओ उनके लिए कोई मुअ्जिज़ा, और अगर अल्लाह चाहता तो इन सब को हिदायत पर जमअ़ कर देता तो हरगिज़ तुम नादानों में न होना। (अल–अनआ़म : ३५)

ऊपर की आयतों में ह़ुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को तसल्ली और दिलासा देने के बाद अब इर्शाद यह हुआ कि अगर तुम पर मुन्किरों की बे रूखी बहुत भारी हो रही है तो तुम से अगर हो सके तो ज़मीन के अन्दर से या आसमान के ऊपर से कोई मुअ्जिज़ा लाकर इन्हें दिखा दो, मतलब यह है कि मुअ्जिज़ा दिखाना तुम्हारे इख़्तियार में नहीं है तो तुम्हें इतना ज़ियादा बे क़रार भी न होना चाहिए बल्कि पूरे सब्र व तह़म्मुल के साथ अल्लाह के फ़ैसले का इन्तिज़ार करना चाहिए, बिला शुब्ह यह तंबीह (चेतावनी) का अन्दाज़ है। अल्लाह तआ़ला ह़ुज़ूरे अकरम का रब, मालिक और ह़ाकिम भी है, वह आप को तंबीह भी फ़रमाता था, क़ुर्आन शरीफ़ में इस को और मिसालें मौजूद हैं। लेकिन इसमें भी कोई शक नहीं कि आयत के इस मज़मून से नबीये अकरम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की तअ़रीफ़ का पहलू भी इन्तिहाई नुमायां है और वह इस तरह कि इस बयान से घमण्डियों, दुश्मनों, और ह़क़ के मुन्किरों की हिदायत व नजात के लिए नबीये पाक अ़लैहिस्सलाम की इन्तिहाई बे चैनी व बेक़रारी का साफ इज़्हार हो रहा है और तौहीद का बहुत ही नुमायां सबक़ इस आयत से यह हासिल हुआ कि मुअ्जिज़े का दिखाना नबीये अकरम अ़लैहिस्सलाम के इख़्तियार में नहीं था बल्कि यह ख़ालिस ख़ुदाई फ़िअ़्ल था जो बस अल्लाह तआ़ला की मशीअत (मर्ज़ी) ही से वजूद में आता था और यह भी मालूम हुआ कि किसी के दिल में हिदायत का दाख़िल कर देना भी ह़ुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के इख़्तियार में नहीं था, अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम को सिर्फ़ तब्लीग़ और वअ़्ज़ व नसीह़त का काम दिया गया था बाकी रहा हिदायत का किसी को अ़ता कर देना तो इस का इख़्तियार अंबिया–ए–किराम को अता नहीं हुआ था। यह भी सिर्फ़ अल्लाह के इख़्तियार की चीज है। इस की एक बहुत ही नुमाया मिसाल जनाब अबू तालिब के वाक़िअे में मिलती है। ह़ुज़ूरे अकरम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की इन्तिहाई चाहत थी कि मेरे चचा ईमान ले आएं। आप ने उन्हें समझाने में कोई कसर बाक़ी नहीं छोड़ी, यहां तक कि उन की जिन्दगी के आख़िरी लमह़ात तक उन्हें समझाने की कोशिश करते रहे मगर वह ईमान न लाये और मह़रूमी ही की हालत में दुन्या से रूख़्सत हो गये, इस दर्दनाक मौक़िअ़ पर आयत नाज़िल हुई :

इन्नक ला तह्दी मन् अह़्बब्त व लाकिन्नल्लाह यहदी मय्यशा। (अल–क़सस : ५६)

बात यूं नहीं कि तुम जिसे चाहो हिदायत दे दो बल्कि अल्लाह जिसे चाहे हिदायत देता है।

दूसरे मौक़िअ पर इर्शाद फ़रमाया :

वमा अक्सरून्नासि व लौ ह़रस्त बिमूअ्मिनीन। (यूसुफ : १०३)

और अक्सर लोग ईमान न लाएं गे चाहे तुम क़ितना भी चाहो।

नबीये अकरम को कामिल फ़रमांबरदारी और तक़्वे का हुक्म :

अल्लाह तआला ने नबीये अकरम अलैहिस्सलाम को हुक्म फ़रमाया : (ऐ नबी) कह दो, बेशक मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं सब से पहला फ़रमाबरदार बन जाऊं। (अल–अनआम :१४)

इसी तरह अल्लाह तआला ने अपनी हस्ती से डरते रहने का भी आंहज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को हुक्म फ़रमाया इरशाद हुआः

या अय्युहन्नबिय्युत्तक़िल्लाह। (सूरतल्अहज़ाब :१)

(ऐ नबी अल्लाह से डरते रहना।)

गौर फ़रमाइये ! क्या कोई महब्बत करने वाला अपने महबूब से यह कहता है कि तुम मुझसे डरते रहना ज़ाहिर है कि मुहिब्ब अपने महबूब' से यह नहीं कहता मगर अल्लाह तआला ने अपने सब से ज़ियादा मुकर्रब व महबूब बन्दे को यह हुक्म फ़रमाया कि मुझ से डरते रहना। आख़िर यह किस क़िस्म की महबूबीयत है? जवाब इस की यही है कि यह बन्दगी वाली महबूबीयत है। बन्दगी में बन्दा जिस क़दर तरक़्क़ी करता जाता है उतनी ही उस की मक़बूलीयत और महबूबीयत में तरक़्क़ी होती जाती है हस्ब ज़ैल (नीची दिये) खुदावन्दी इरशाद से यह हक़ीक़त पूरी तरह ज़ाहिर है, अल्लाह तआला ने हुज़ूरे अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम) को हुक्म फ़रमाया वस्जुद वक़्तरिब् (हमें सजदे किये जाओ औरहम से क़रीब से क़रीब तर होते जाओ।) दुन्या का मुहिब्ब अपने महबूब से कभी नहीं कहता कि मुझ से डरो और मुझे सज्दे करो लेकिन अल्लाह तआला ने अपने महबूब को यह हुक्म दिया। इस से निहायत आसानी के साथ इस हक़ीक़त को समझा जा सकता है कि दुन्या के महबूब व मुहिब्ब का मुआमला और है और ख़ालिक़ व मख़लूक़ का मुआमला बिल्कुल दूसरा है उस के मुआमले को मख़लूक़ के आपसी महब्बत व तअल्लुक़ पर क़ियास नहीं किया जा सकता।

इसी तरह अल्लाह तआला ने हुज़ूरे अक़्दस को हुक्म फ़रमाया :

अनुवाद : अपनी मौत के वक़्त तक अपने रब की इबादत करते रहना। (अल–हिज्र : ११)

यह है बन्दगी वाली महबूबीयत जिसे इस तरह की आयात के ज़रीअे बड़ी आसानी से समझा जा सकता है।

इस तहरीर में हम ने क़ुर्आन व हदीस के खुले हुए बयानात के ज़रीअे हुज़ूर महबूब रब्बिल आलमीन, ख़ातमन्नबियीन, रहमतुल्लिल आलमीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मुक़द्दस व मअज़्ज़म हस्ती के दोनों पहलू वाज़ेह करने की कोशिश की है। एक यह पहलू कि सारी मख़लूक़ में आप ही को अल्लाह तआला के यहां सब से ज़ियादा महबूबीयत व क़ुर्बत का दर्जा हासिल है। दूसरा पहलू यह कि सबसे अफ़ज़ल वबरतर (श्रेष्ठ) होने के बावजूद बन्दगी की हदों से निकल कर आप ख़ुदाई सिफ़ात से मौसूफ़ और ख़ुदाई के मालिक नहीं हो गये थे। बल्कि तमाम फ़ज़ाइल व ख़ुसूसियात के बावजूद आप थे अल्लाह के बन्दे, रसूल और बशर ही। ख़ुदाई की कोई बात आप की ज़ात में नहीं थी।

अब आख़िर में ख़ुदाई हुकूमत में अल्लाह तआला की यक्ताई का क़ुर्आन से सुबूत पेश कर के हम इस मज़्मून (लेख) को ख़त्म करते हैं।

पैदा करने और हुकूमत करने में किसी का साझा न होने का अल्लाह तआला ने इस तरह एअ्लान फ़रमायाः

अनुवाद : सुन लो पैदा करना और हुकूमत करना बस अल्लाह ही का काम है। (अल–अअ्राफ़ : ५४)

और फ़रमाया : (अनुवाद) और बादशाही में कोई भी उस का साझी नहीं। (बनीइस्राईल : १११)

इस आयत में अल्लाह तआला ने हर क़िस्म के शरीक का इन्कार फ़रमाया, चाहे किसी को अल्लाह तआला के बनाने से शरीक माना जाए चाहे किसी को अल्लाह तआला के बनाए बिना ख़ुद से शरीक बन बैठने वाला माना जाए। मतलब यह हर क़िस्म के शरीक का मुतलक़ इन्कार फ़रमाया गया।

और सूर–ए–कहफ़ की आयत २६ में इरशाद हुआ :

अनुवाद : और वह किसी को भी अपनी हुकूमत में शरीक नहीं बनाता। यह है वह हक़ीक़त जिस का मुख़्तलिफ़ पैरायों में हज़ारों जगहों पर क़ुर्आन शरीफ़ में इज़्हार व एअ्लान फ़रमाया मगर अफ़सोस कि सदियों से उम्मत के हज़ारों लाखों लोग हक़ीक़त न जानने के सबब अंबिया व औलिया को और ख़ास तौर पर इमामुल मुवहि्ददीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़िस्म क़िस्म की बातिल तावीलों के सहारे अल्लहा की सिफ़ात और उसकी हुकूमत में शरीक

ठहराते चले आ रहे हैं, और इन्तिहाई अफ़सोस के साथ हम यह कहने पर मजबूर हैं कि यह खुला हुआ मुश्रिकाना अ़क़ीदा रोज़ बरोज़ मुस्लिम अ़वाम में फैलता जा रहा है। इस मुश्रिकाना अकीदे से मुसलमानों को नजात दिलाने की कोशिश, दीन से वाक़िफ़ीयत रखने वालों पर और ख़ास तौर से इ़ल्म वाले हज़रात पर फ़र्ज़ है। इस फ़र्ज़ को माज़ी में भी अहले इ़ल्म हज़रात अदा फ़रमाते रहे हैं और आज भी अल्लाह के बातौफ़ीक बन्दे यह फ़र्ज़ अदा करने की कोशिश में लगे हुए हैं। मगर यह भी हक़ीक़त (सत्य) है कि जितनी बड़ी तअ़दाद (संख्या) में अ़वाम इस मुहलिक (संहारक) अ़क़ीदे का शिकार रहे हैं उस के मुक़ाबले में इस्लाह की कोशिश करने वालों की तअ़दाद (संख्या) बहुत ही थोड़ी रही है। इस सिल्सिले में करने का सब से अहम (महत्वपूर्ण) मुफ़ीद व मुअस्सिर (लाभदायक तथा प्रभावशाली) काम यह है कि आ़म मुसलमानों तक क़ुर्आने मजीद (अर्थात उसका सन्देश) पहुंचाया जाए, क़ुर्आने मजीद के मज़ामीन (बयानात) से उन्हें वाक़िफ़ कराया जाए और उसकी सब से आसान शक्ल यह है कि क़ुर्आन की तफ़सीर के हल्क़े (गोष्ठियां) क़ाइम किये जाएं, खास तौर से मस्जिदों में तफ़सीर बयान की जाए। अल्लाह तआ़ला इस ख़िदमत की जानिब इ़ल्म वालों को मुत्वज्जेह फ़रमा दे। आमीन!

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, लाइलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिलहम्द।

मरे हुए लोगों की रूहों को हाज़िर करना

अबू मर्गूब

कुछ आ़मिलों (तांत्रिकों) का कहना है कि वह कुछ अ़मलों और वज़ीफ़ों से मुर्दों की रूहों को हाज़िर कर देते हैं। उनसे बातें की जा सकती हैं और उनकी बातें सुनी जा सकती हैं। मेरा कहना है कि मेर इ़ल्म में क़ुर्आन व हदीस से ऐसा कोई वज़ीफ़ा (जाप) साबित नहीं है जिस से मुर्दों की रूहें हाज़िर की जा सकें या जिन्नात क़ब्ज़े में आ सकें, न ही मेरे इ़ल्म में किसी ने किताब व सुन्नत से साबित किसी ऐसे वज़ीफ़े का दअ़वा किया है। कुछ आ़मिल यह दअ़वा ज़रूर करते हैं कि सूर–ए–जिन्न या क़ुर्आने मजीद की दूसरी आयत के ख़ास अ़मल से जिन्नों को क़ब्ज़े में किया जा सकता है या उनको हाज़िर किया जा सकता है, लेकिन ऐसे अ़मलों और वज़ीफ़ों की तअ़लीम (शिक्षा) चूंकि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहिवसल्लम) ने नहीं दी इसलिए इनपर यक़ीन नहीं रखता और मेरा अ़क़ीदा है कि किसी भी जाइज़ अ़मल से जिन्नों को क़ब्ज़े में नहीं किया जा सकता यह अलग बात है कि किसी जुहद व तक़्वा वाले के वह ख़ुद से ताबिअ़ होकर उस की ख़िदमत करने लगें। फिर किसी अल्लाह की ऐसी मख़्लूक़ को जिसे अल्लाह ने शरीअ़त का पाबन्द बनाया हो, बे सबब उस को ग़ुलाम बना लेना, अपने क़ब्ज़े में कर लेना जाइज़ भी केसे हो सकता है? जिस तरह हम को आज़ाद रहने का हक़ है जिन्नों को भी आज़ाद रहने का हक़ है लिहाज़ा ऐसे नाजाइज़ अ़मल की तअ़लीम किताब व सुन्नत से हरगिज़ नहीं हो सकती हां यह हो सकता है कि किसी नाजाइज़ अ़मल से कोई शैतान इताअ़त के लिए हाज़िर हो जाए, लेकिन वह भी हर काम न कर सकेगा न करेगा बस आ़मिल से गुनाह करवा करवा कर उसके कुछ हल्के फुल्के काम कर देगा और आ़मिल साहिब धोखे में रहेंगे कि जिन्न हमारे क़ब्ज़े में है जब कि सच यह है कि आ़मिल साहिब ख़ुद उस जिन्न के क़ब्ज़े में हैं।

बेशक अल्लाह के मुत्तक़ी व परहेज़गार (संयमी) बन्दो की ख़िदमत में जिन्न हाज़िर भी हो सकते हैं और हाज़िर होते हैं, वह उन की ख़िदमत भी कर सकते हैं और ख़िदमत की है। क़ब्ज़े में वह भी नहीं होते न हर काम कर सकते हैं वरना न बाबरी मस्जिद हाथ से जाती न मस्जिदे अक्सा, न अफ़गानिस्तान में तालिबान की हुकूमत जाती न इराक़ में अमरीका ख़ून ख़राबा कर सकता । आ़मिलों के जिन्न सब का तिया पांचा कर देते।

रही बात मुर्दों की रूहों की तो वह तो या सिज्जीन में क़ैद हैं या इ़ल्लिय्यीन में आराम कर रही हैं या जन्नत के बागों में सैर कर रही हैं। वह यहां किसी के अ़मल से न सिज्जीन से निकल सकती हैं न इ़ल्लिय्यीन से यहां आ सकती हैं। जो आ़मिल रूहों को हाज़िर करने का दअ़वा करते हैं वह सिरे से धोखा देते हैं और अगर कहीं इस का तजरिबा हुआ और लगा कि किसी की रूह बोल रही है तो वह या तो शैतान है या कोई फ़ासिक़ जिन्न मुर्दे की रूह हरगिज नहीं, अगर वह मुर्दे की ज़िन्दगी के वाक़िआ़त बताता है तो वह मरने वाले का हमज़ाद जिन्न हो सकता है।

आज कल तो ऐसे आलात और कैसिट तैयार हो गये हैं कि धोखा दिया जाना बहुत आसान हो गया है। साथ ही आ़मिलों के धोखों को पकड़ पाना आसान नहीं, आ़मिल लोग मुक़ाबले पर आ जाते है। बेहतर है कि उनसे दूर रहें और इम्कान भर लोगों को समझा कर उनसे दूर रखने की कोशिश करें।

आधुनिक तकनीक और बदलती शिक्षा के मूल्य

डा० एम० नसीम

हर नई नस्ल पुरानी हो जाती है और उसकी जगह एक दूसरी नस्ल तैयार हो जाती है जो नवीन (जदीद) कहलाती है। लेकिन कुछ चीजें नई नस्ल को पुरानी नस्ल से धरोहर के तौर पर प्राप्त होती है। वही मूल्य (कदरें) कहलाती है। उनमें कुछ ऐसी लचक और क्षमताएं होती हैं जो आधुनिक तक़ाज़ों के अबुरूप ढल जाती हैं। यह मूल्य शैक्षिक भी होते हैं और धार्मिक तथा सांस्कृतिक भी होते हैं। नई सामाजिक तबदीलियों का प्रदर्शन सबसे पहले शिक्षा संस्थानों में होता है क्योंकि विचारों और रूझानों का निर्माण और कार्यकलाप वहीं से शुरू हो जाता है। अतः आने वाले चन्द वर्षों में हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में जो परिवर्तन होने वाला है उसका अनुमान अभी से लगाया जा सकता है।

देश के बुद्धिजीवीय वर्ग और चिन्तन करने वाले अध्यापकों और बुद्धिमान विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों को आने वाले तालीमी इन्कलाब की बाजगश्त (प्रत्यागमन) अभी से महसूस होने लगी है आधुनिक टेकनालोजी का प्रभाव कितनी तेजी से हमारे समाज पर पड़ रहा है इस का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि आज ई०कामर्स (E.Commerce) के तहत रोजाना २०० दुकानें इंटरनेट पर खुल रही हैं। भारत में अभी ६ लाख किताबों की सूची मौजूद है और कोई भी किताब दुन्या के किसी भी देश में किसी भी व्यक्ति की मेज पर केवल ४८ घंटे में पहुंचाई जा सकती है।

हमारे देश में भी आधुनिक तकनीकी व्यवस्था बहुत ही तेजी के साथ रायज हो रही है जो हमारी तालीम और मुख्यतः उर्दू वालों के लिए बहुत ही लाभदायक और उपयोगी साबित होने वाली है क्योंकि भारत की दूसरी भाषाओं के मुकाबले में उर्दू का क्षेत्र अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर बहुत ही व्यापक है। सन् १९४७ में आजादी मिलने के बाद हिन्दुस्तान की उत्तरी और मध्य प्रान्तों से जहां उर्दू ने जन्म लिया था उर्दू को बाहर कर दिया गया लेकिन उर्दू अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना क्षेत्र बढ़ाकर ऐशिया, यूरोप अमेरिका और अफरीकी देशों में अपनी लोकप्रियता हासिल करने में कामयाब होने लगी है और जल्दी ही केबुल कनेक्शन के द्वारा इन्टरनेट की जो सुविधाएं टेली फोन पर प्राप्त हो ने वाली हैं उस से उर्दू के फैलाव, लोकप्रियता और शिक्षा प्रसार में भारी उछाल आने की सम्भावनाएं हैं। आधुनिक सूचना तकनीकी के विशेषज्ञ असगर अफसर अन्सारी ने उर्दू भाषा को इसी नई तकनीकी उन्नति से जोड़ने के लिए महत्वपूर्ण कारनामे अंजाम दिए हैं।

चुनानचः अब उर्दू इंटरनेट पर पत्र के रूप में दिखाई देने लगी है। उन्होंने पिछले महीनों में उर्दू इंटरनेट पर जो प्रोग्राम जारी किये थे उस को दुन्या भर के लगभग पछहत्तर हजार लोग पढ़ रहे हैं। उन्होंने लगभग पचास लाख रूपये की लागत से उर्दू इंटरनेट तकनीक का निर्माण किया है इस के कारण अब उर्दू भाषा भी दुन्या की उन्नति प्राप्त भाषाओं की तरह इंटरनेट खोलते ही देखी जा सकती है।

उर्दू इंटरनेट १० लाख वेब पृष्ठों पर आधारित है जिस पर आम सर्च इंजिन द्वारा पहुंच एक कठोरतम प्रकिया थी। लेकिन उर्दू इंटरनेट के लिए सर्च इंजिन का विकास करके अब १० लाख पृष्ठों तक सेकेण्डों में पहुंचना सम्भव हो गया है। उर्दू की इस प्रथम पोर्टल (Portal)को कई चैनलों में बांट दिया गया है जिसमें उर्दू समाचार, उर्दू सर्च, उर्दू वेब डायरेक्ट्री, महफिल, बजमे अदब, साहित्य (देवनागरी) उर्दू, बधाई पत्र, जन गणना और पुस्तकों की समीक्षा शामिल है। इसके अतिरिक्त उर्दू इंटरनेट में दोस्ती, चुटकुले, लतीफे, और दूसरे मनोरंजन जैसे फिल्मी गाने और खेल कूद आदि तथा उर्दू समाचार के इंटरनेट टेलीकास्ट के चैनल भी शामिल हैं, मानव अधिकार और भारती अल्पसंख्यकों के बारे में चैनल भी शामिल किये जाने वाले हैं। उर्दू इंटरनेट की लोकप्रियता को देखते हुए भारतीय कम्प्यूटर इंजीनियर्स ३ करोड़ रूपये की लागत से एक कार्पस सुनिश्चित करने के लिए तैयार हो गये हैं और यह सब उर्दू नेट मास कम्यूनिकेशन प्राइवेट लिमिटेड के माध्यम से हो रहा है जिसका पता

www.urdu.com है।

कम्प्यूटर विशेषज्ञों (माहिरीन) का कहना है कि २००८ तक हिन्दुस्तान में क़म्प्यूटर साफटवेयर और हार्डवेयर पर लगभग चार करोड़ रूपये का कारोबार होने लगेगा। ई–कामर्स और इंटरनेट के विकास के लिए लगभग ५० लाख प्रशिक्षित (**Trained**) लोगों की जरूरत पड़ेगी जिसमें उर्दू जानने वालों की अच्छी खासी संख्या की मांग होगी जब कि हिन्दुस्तान में अभी आधुनिक समाचार तकनीक की शिक्षा आम नहीं हो सकी है और हर वर्ष लगभग ६८ हजार लोग ही आधुनिक तकनीक की शिक्षा प्राप्त कर के निकल रहे हैं जिस में उर्दूदां तबके की संख्या बहुत ही कम होती है जबकि अंतर्राष्ट्रीय और मुल्की स्तर पर मल्टीनेशनल कम्पनियों को अपने कारोबार के विकास के लिए जो उम्मीदवारों की जरूरत पेश आने वाली है उस में उर्दू जानने वालों की अच्छीखासी संख्या होगी। इसलिए उर्दू दां लोगों को प्रशिक्षण (तर्बियत) हासिल करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

हिन्दुस्तान में जहां आधुनिक शिक्षा और तकनीकी तर्बियत की जरूरत है वहीं वर्तमान शिक्षा व्यवस्था और शिक्षा प्रणाली (तरीक़–ए–तालीम) को आधुनिक तकनीक के अनुरूप बनाना भी जरूरी है। इसलिए तालीमी सोच विचार में तबदीली लानी होगी और पुरानी शिक्षा प्रणाली छोड़ कर आधुनिक मांग के अनुसार तालीम को तबदील करना होगा। इसके लिए नये ढंग से पाठ्यक्रम को तैयार करना पड़ेगा और स्कूल मदरसों की पढ़ाई के तरीक–ए–अमल के साथ साथ मैनेजिंग बाडी में भी काफी तबदीली लानी पड़ेगी। ऐसे अध्यापकों का भी चयन करना पड़ेगा जो आधुनिक शिक्षा से लैस हों। स्कूल, मदरसों और शिक्षा संस्थानों को भी नई डिजाइन के साथ स्थापित करना होगा। क्लास रूम, पुस्तकालय और प्रयोगशालाएं आदि सभी शिक्षा सामानों को नये रंग व रूप से सुसज्जित करना होगा जिनका सम्बन्ध ा शिक्षा और ट्रेनिंग से है क्योंकि नई जरूरतों और वर्तमान मांगों को देखते हुए अब शिक्षा भी काफी बदले हुए अर्थों में इस्तेमाल होगी। इसलिए नये शिक्षा उद्देश्यों में नये रूझानों का पैदा होना अनिवार्य (नागुज़ीर) होगा।

वर्तमान युग में तेज़ी से उभरकर मानवी जीवन पर छा जाने वाली आधुनिक सूचना तकनीक जहां संसार की सभी उन्नति प्राप्त भाषाओं के लिए लाभदायक है वहीं उर्दू जैसी कम उम्र आधुनिक भाषा के लिए एक वरदान है क्योंकि इस आधुनिक सूचना तकनीक से उर्दू भाषा, साहित्य की शिक्षा अध्ययन पत्रकारिता और सूचना माध्यमों में नित नई तबदीलियां दिखाई पड़ने लगी हैं और मुख्यतः उर्दू शिक्षा को इस नई तकनीक सहूलत से जहां विकास और तरक्की में तेजी से बदलाव भी होने वाले हैं वहीं उर्दू के बुद्धिमान, होनहार और प्रशिक्षित (तर्बियतयाफता) विद्यार्थियों के लिए लाभप्रद रोजगार के अवसर भी पैदा होंगे। लेकिन अयोग्य अध्यापकों के लिए यह नई तबदीली परेशानी का सबब भी बनेगी क्योंकि निकट भविष्य में नई तालीमी तकनीक की जिम्मेदारियों को पूरा करना उनकी क्षमता से बाहर हो जाएगा।

अतएव शिक्षण कार्य को अंजाम देने के लिए केवल उन अध्यापकों की नियुक्ति हो सकेगी जो नई तकनीक में निपुर्ण होंगे। इसका एक लाभ तो यह होगा कि जो अयोग्य अध्यापक तालीमी माहौल के खराब करते थे और नसलों की नस्लों को बरबाद करते थे उन पर बड़ी हद तक रोक लग जाएगी और नयी शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों के भविष्य उज्जवल होंगे क्योंकि नई तालीमी कलचर में पठन पाठन केवल पाठ्यक्रम और क्लास रूम की मालूमात तक सीमित नहीं रह सकेगा और शिक्षा क्लासरूम के साथ वाह्य जानकारी प्राप्त करना अनिवार्य विषय वस्तु बन जाएगी। ऐसे में वह अध्यापक टिक पाएंगे जो भरोसामन्द होंगे नित नई जानकारी, प्रतिदिन की तबदीली और नये अनुसन्धान (तहक़ीक़) से अवगत होंगे। इन नये तालीमी हालात की जिम्मेदारी को पूरा करने और नये चुनौतियों के लिए नयी शिक्षा प्रणाली पर आधारित अध्यापकों की एक नयी टीम अभी से तैयार होनी चाहिए।

आधुनिक सूचना तकनीक और इस से प्रभावित प्रकट होने वाली तालीमी तबदील उर्दू लिपि, आवाज, इमला आदि को भी प्रभावित करसकती है परन्तु किसी बनियादी तबदीली की सम्भावनाएं नहीं हैं। इन बदलते शिक्षा मूल्यों से वर्तमान अध्यापक और मन्द बुद्धि विद्यार्थियी नई तालीमी तकनीक का कहां तक साथ देपाएंगे इस बारे में अभी से कुछ कहना क़ब्ल अज़ वक़्त (समय से पहले) होगा। इन सभी उन्नति प्राप्त भाषाओं में उर्दू एक उन्नति प्राप्त भाषा के रूप में उभर कर सामने आएगी। क्या उर्दू दां आने वाली रफतारे तरक्की का साथ दे सकेंगे। यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है जिसका उत्तर आने वाला समय ही देगा।

अनुवाद – हबीबुल्लाह आजमी

वैदिक काल की सभ्यता

इतिहास के पन्नों से

इदारा

वैदिक काल का तात्पर्य : वैदिक काल उस काल को कहते हैं जिस काल में वैदिक ग्रन्थों की रचना की गई थी। इन ग्रंथों की एक बहुत बड़ी विशेषता यह कि यह एक दूसरे से सम्बद्ध हैं और इनका क्रमागत विकास हुआ है। सबसे पहले ऋग्वेद तथा उसके बाद अन्य वेदों की रचना की गई। वेदों की रचना के बाद उनके व्याख्या करने के लिए ब्राहमण–ग्रंथों संख्या इतनी अधिक हो गई है और उनका स्वरूप इतना विशाल हो गया कि उनको कंठाग्र करना, जन–साधारण के लिए कठिन हो गया। अतएव उन्हें सक्षिप्त स्वरूप देने के लिए सूत्रों की रचना की गई। इस सम्पूर्ण वैदिक साहित्य की रचना में सहस्त्रों वर्ष लग गये। विद्वानों की ध ाारणा है कि वैदिक साहित्य की रचना ईसा से २,५०० से २,००० वर्ष पूर्व के मध्य में की गई थी। अतएव इस काल को वैदिक काल नाम से पुकारा गया है।

वैदिक काल का विभाजन – वैदिक काल को दो भागों में विभक्त किया गया है अर्थात ऋग्वैदिक काल तथा उत्तर वैदिक काल। वेदों में ऋग्वेद सबसे अधिक प्राचीन है। अतएव ऋग्वेद की सभ्यता सबसे अधिक पुरानी है। ऋग्वेद की रचना के काफी दिनों बाद अन्य वेदों की रचना की गई। चूंकि सभ्यता स्थिर नहीं रहती वरन उसका क्रमिक विकास होता रहता है। अतएव उत्तर–वैदिक काल के ऋग्वैदिक सभ्यता क्रमशः विकास होता गया और इसमें परिवर्तन होते गये हैं। ऋग्वैदिक काल में वह लोग सप्त–सिन्धु में निवास करते थे। अतएव ऋग्वेद की सभ्यता सप्त–सिन्धु की सभ्यता है। उत्तर–वैदिक काल में आर्य लोग सरस्वती तथा गंगा नदियों के मध्य की भूमि पर पहुंच गये थे और वहां पर अपने राज्य स्थापित कर निवास करने लगे थे। इस प्रदेश का नाम करूक्षेत्र उत्तर–वैदिक के आर्यों की सभ्यता का यहीं विकास हुआ। वैदिक काल में जीवन चार आश्रमों पर विभाजित था। था। इन आश्रमों का पालन केवल प्रथम तीन वर्गों अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य को ही करना पड़ता था।

गृह की व्यवस्था – ऋग्वैदिक आर्यों के मकान बांस के बने होते थे। इनको बनाने में लकड़ी तथा सरपत की भी प्रयोग किया जाता था। प्रत्येक घर में अग्निशाला का प्रबन्ध रहता था। जिसमें सदैव अग्नि जलती रहती थी। प्रत्येक घर में एक बैठक और स्त्रियों के लिए अलग कमरा होता था।

शव–विसर्जन : इस काल में आर्य लोग मृतक शरीर को या तो जला देते थे या गाड़ देते थे परन्तु विधवाओ को जलाया नहीं जाता था वरन् उन्हें गाड़ दिया जाता था।

आर्थिक दशा : ऋग्वैदिक आर्यों के आर्थिक जीवन का परिचय प्राप्त करने के लिए हमें निम्नलिखित बातों पर विचार करना होगा –

१. गांवों की व्यवस्था – ऋग्वैदिक आर्य गांवों में रहते थे। नगरों का ऋग्वैद में कहीं उल्लेख नहीं मिलता। गांव पास–पांस होते थे। सुरक्षा के लिए प्रत्येक घर गाड़ियों अथवा अन्य किसी चीज से घिरा रहता था। घर बांस तथा लकड़ी के बने होते थे।

(२) कृषि, ऋग्वैदिक आर्यों का प्रधान उद्यम था। सबके खेत अलग–अलग होते थे परन्तु चरागाह सबका एक होता था। खेती हल से की जाती थी। यह लोग प्रधानतः गेहूं तथा जौ की खेती करते थे। फल तथा तरकारी भी यह लोग पैदा करते थे।

(३) पशु पालन – ऋग्वैदिक आर्यों का दूसरा प्रमुख व्यवसाय पशुपालन था। पशुओं में गाय का सबसे अधिक महत्व था, क्योंकि वह सबसे अधिक उपयोगी होती थी। गाय को अध्न्या कहा गया है अर्थात् जो मारी न जाय। बैलों को हल जोतने तथा गाड़ी खींचने के काम में लायाजाता था। घोड़ों का प्रयोग रथों में किया जाता था। इनके अन्य पशु भेड़, बकरे थे कुत्ते रात में रखवाली करते थे।

(४) पशुओं का शिकार – ऋग्वैदिक आर्य मांस खाते थे। अतएव पशुओं का शिकार भी उसकी जीविका का एक साधन था। सुअर,मृग तथा भैंसों का शिकार ये लोग धनुष–बाण द्वारा करते थे और पक्षियों को जाल में फंसा लेते थे। कभी कभी शेरों को भी चारों ओर से घेर कर मार डालते थे।

(५) दस्तकारी के कार्य – ऋग्वैदिक आर्य दस्तकारी के कार्य में भी बड़े कुशल थे और यह भी उनकी जीविका का एक साधन था। बढ़ई लोग बहुत अच्छे अच्छे रथ तथा गाड़ियां बनाते थे। यह लोग लकड़ी के प्याले भी बनाते थे और उन पर बहुत अच्छी नक्काशी करते थे। लोहार लोग लोहे, तांबे, पीतल के विभिन्न प्रकार के बर्तन, अन्य–शस्त्र तथा अन्य उपयोगी चीजें बनाया करते थे। सुनार लोग सोने–चांदी के बहुत अच्छे आभूषण बनाते थे। चर्मकार लोग कपड़े की बड़ी अच्छी चीजें बनाया करते थे। सोना–पिरोना, चटाइयां बुनना, ऊनी तथा सूती कपड़े बनाना आदि भी जीविका के साधन थे। कुम्हार लोग मिट्टी के बहुत अच्छे बर्तन बनाया करते थे।

(६) व्यापार– ऋग्वैदिक आर्यों की जीविका का एक साधन व्यापार था। ये लोग विदेशी तथा आंतरिक दोनों प्रकार का व्यवसाय करते थे। प्रायः व्यापार वस्तु–विनिमय द्वारा होता था। बाद में गाय द्वारा मूल्य आंका जाता और अन्त में सोने–चांदी का प्रयोग होने लगा और निष्क नामक मुद्रा का व्यापार होने लगा। कपड़े, चमड़े तथा चद्दरें व्यापार की मुख्य वस्तुएं होती थीं। मगर जाने के लिए गाड़ियों तथा रथों का प्रयोग किया जाता था। नदियों को पार करने के लिए नावों का प्रयोग किया जाता था।

(७) ऋण की प्रथा – ऋग्वैदिक काल में ब्याज पर ऋण देने की प्रथा वैश्य साहूकार तथा महाजन इस कार्य को किया करते थे और यह उसकी जीविका का साधन होता था। ऋण चुकाना एक धार्मिक कर्तव्य समझा जाता था और न चुकाने पर उसे अपने महाजन की एक निश्चित समय तक सेवा करनी पड़ती।

कला – ऋग्वैदिक काल के लोगों की विभिन्न कलाओं में रूचि थी। जिन कलाओं में इन लोगों ने कुशलता प्राप्त करने का प्रयत्न किया वे निम्नलिखित थीं।

(१) काव्य कला – ऋग्वैदिक आर्य काव्य–कला में बड़े कुशल थे। और पद्य में लिखा गया है। ऋग्वेद का अधिकांश काव्य धार्मिक गीत–काव्य है काल की कविता में स्वाभाविक तथा सौन्दर्य है। उषा की प्रशंसा में ऋषि ने बड़ी भावुकता प्रकट की है।

(२) लेखन कला – यह निश्चित रूप में नही कहा जा सकता है कि आर्य लेखन कला से परिचित थे अथवा नहीं; परन्तु कुछ विद्वानों की धारणा वे इस काम को जानते थीं।

(३) अन्य कलाएं – ऋग्वैदिक आर्य अन्य बहुत–सी कलाओं में प्रवीण गृह निर्माण कला में वे ऐसे निपुण थे कि सहस्त्र स्तम्भ तथा सहस्त्रद्वार के मकान बना डालते थे। कताई, बुनाई रंगाई, धातु कला, संगीत, नृत्य, गायन आदि में वैदिक काल के आर्य बड़े निपुण थे।

धार्मिक जीवन : ऋग्वैदिक आर्यों का जीवन वास्तव में धर्ममय जीवन का कोई ऐसा अंग न था जिस पर धर्म की गहरी छाप न हो। इस काल का धर्म बड़ी उच्च–दशा में था जिसका स्वरूप निम्नांकित था –

(१) प्रकृति उपासना – ऋग्वैदिक आर्य प्रकृति की पूजा किया करते थे उनका विश्वास था कि सूर्य, चन्द्र, वायु, मेघ आदि में ईश्वर निवास करता है अतएव वे इन सबकी उपासना किया करते थे।

(२) देवताओं का वर्गीकरण –ऋग्वेद में ३३ देवताओं की प्रार्थना की गयी इन देवताओं को तीन भागों मे बांटा गया है अर्थात आकाश के मध्य–स्थान के पृथ्वी के प्रत्येक वर्ग में ११ देवता हैं, जिनमें से एक सर्वप्रधान है। इस प्रकार के सर्वश्रेष्ठ देवता सूर्य, मध्य स्थान के वायु अथवा इन्द्र और पृथ्वी के अग्नि हैं। अनेक देवताओं में विश्वास करते हुए ऋग्वैदिक आर्यों के धर्म का मूलाधार एकेश्वरवाद ही है और उनका एक ही ईश्वर था जिसे वे प्रजापति कहते थे और जो सर्वव्यापी था।

(३) देवताओं की विशेषताएं – ऋग्वैदिक काल में देवताओं में कुछ विशेषताएं पाई जाती हैं। उनकी पहली विशेषता यह है कि सभी देवता दयावान तथा चिंतक दिखाये गये हैं। कोई भी देवता दुष्ट स्वभाव का प्रदर्शित नहीं किया गया । इनकी दुसरी विशेषता यह है कि ये विभिन्न स्वभाव के होते हैं और इनके कार्य विभिन्न प्रकार के होते हैं। इनकी तीसरी विशेषता यह है कि सभी जन्म लेते परन्तु फिर अमर हो जाते हैं। इनकी चौथी विशेषता यह है कि सभी वायु में भ्रमण करते हैं जिनके रथों में घोड़े अथवा अन्य पशु जुते रहते हैं। इनकी पांचवीं विशेषता यह है कि इन्हें मानव–स्वरूप में प्रदर्शित किया गया है और मनुष्य का खाद्य–पदार्थ, या दूध, अन्न, मांस आदि की जब बलि दी जाती है, तब वही इनका भोजन बन जाता है। इनकी यह भी एक विशेषता है कि पृथ्वी, उषा आदि देवियों का उतना महत्व नहीं है जितना इन्द्र, वरूण आदि देवताओं का है। ईश्वर

की एक परम सत्ता का उनका विश्वास था जो इस जगत का निर्माण तथा पालन करने वाला है।

(४) धार्मिक कृत्य – यज्ञ तथा बलि का ऋग्वैदिक धर्म में बहुत बड़ा महत्व था। यज्ञ में दूध, अन्न, घी, मास सोमरस आदि देवताओं को चढ़ाया जाता था। धार्मिक कार्यों में प्रार्थना तथा स्तुति का बड़ा ऊंचा स्थान है। इस कार्य में आर्यों का विश्वास था कि प्रार्थना ईश्वर तक पहुंचती है और वह उससे प्रसन्न होता है। गायत्री मंत्र का बहुत बड़ा महत्व था इसका पाठ दिन में तीन बार अर्थात् प्रातः काल, दोपहर में तथा संध्या समय किया जाता था। पितरों की पूजा प्रचलित थी। सदाचार पर बहुत बल दिया जाता था।

उत्तर वैदिक काल – उत्तर का अर्थ होता है बाद का। अतएव जो वेद ऋग्वेद के बाद में आते हैं उनके काल को उत्तर वैदिक काल कहते हैं। ऋग्वेद के बाद यजुर्वेद, सामवेद, अर्थवेद तथा ब्राह्मण सूत्र ग्रंथों की रचना हुई थी। यह ग्रंथ ईसा के १,५०० वर्ष पूर्व से २००० वर्ष पूर्व तक लिखे गये थे। अतएव इसी काल को उत्तर वैदिक *काल के नाम से* पुकारा जाता है। ऋग्वैदिक तथा उत्तर–वैदिक काल में बहुत अन्तर पड़ जाता है। अतएव उत्तर–वैदिक काल में आर्यों की सभ्यता तथा संस्कृति में बहुत कुछ अन्तर आ गया था। अब उनके राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक जीवन में जो अन्तर आ गया था उस पर विचार किया जायेगा।

आप पर बे अ़दद हों दुरूदो सलाम

अबू मर्गूब

ख़ातिमुल अंबिया ख़ातिमुलमुर्सलीं
अशरफुल अंबिया सय्यिदुलमुर्सलीं
जिन का तक्या हुआ रब का अ़र्शे बरीं
इस जहां मे जो है आज तैबा मकीं
जो है ख़ैरूल बशर और ख़ैरूल अनाम
उन पे लाखो दुरूद उन पे लाखो सलाम
जिसने मिअ़राज में रब से की गुफ़्तगू
जिसको उम्मत की वां भी रही जुस्तुजू
ऐसा मुश्फ़िक़ जहां ने न देखा कभू
देखो क़ुदरत ख़ुदा की कहो अल्लाहू
वह है ख़ैरूल बशर और ख़ैरूलअनाम
उनपे लाखो दुरूद और लाखो सलाम
तुहफ़ा मिअ़राज का पंजगाना नमाज़
हो अदा दिल से बस वालिहाना नमाज़
बस पढ़ो फ़र्ज़ो नफ़्ल आ़बिदाना नमाज़
उस मे युस्र में ज़ाहिदाना नमाज़
जिन की आखो की ठण्डक बनी यह नमाज़
उन पे लाखो दुरूद उन पे लाखो सलाम
जो कि कहते है। बस या नबी या नबी
उनके रस्ते पे चलते नहीं है कभी
करते अल्लाह से है खुली दिल लगी
खुश नहीं उनसे होंगे कभी भी नबी
वह है ख़ैरूलबशर और ख़ैरूल अनाम
उन पे लाखो दुरूद और लाखो सलाम
हम को गन्दा किया था महा पाप ने
हमको कुन्दन किया ऐ नबी आपने
हमको ईमां दिया ऐ नबी आप ने
हमको क़ुआं दिया ऐ नबी आपने
आप ख़ैरूल बशर आप ख़ैरूलअनाम
आप पर बे अ़दद हों दुरूदो सलाम
रह पे हूं आप की साफ़ एअ़लान है
मैं नहीं बिदअ़ती साफ़ एअ़लान है
आप की बात दीं साफ़ एअ़लान है
आप आख़िर नबी साफ़ एअ़लान है।
आप ख़ैरूल बशर आप ख़ैरूल अनाम
आप पर बे अ़दद हों दुरूदो सलाम
छोड़ दीं बाप दादा की रस्में सभी
ताकि सुन्नत पे साबित रहूं ऐ नबी
छोड़ दूं आप को ये तो मुम्किन नहीं
जान जाये जो इस में तो परवा नहीं
आप ख़ैरूलबशर आप ख़ैरूल अनाम
आप पर बे अ़दद हों दुरूदो सलाम

तिब्बे नबवी

गुफ़रान नदवी

रोटी से उंगलियां साफ करना:

रिज्क (जीविका) अल्लाह तआला का एक इनआम (पुरस्कार) है और बहुत बड़ा इनआम है, फिर इनआम जितना बड़ा होता है, उसका अदब व एहतराम (सादर सम्मान) भी उतना जियादा जरूरी होता है।

हुजूर करीम (सल्ल०) का इरशाद है "रोटी की इज्जत करो, क्योंकि अल्लाह करीम ने उसे आसमान की बरकतों से उतारा है और तुम रोटी से हाथ साफ न किया करो" हुजूर(सल्ल०) खुद खाने के बाद तीन बार उंगलियां चाटते थे। हजरत अनस (रज़ि०) इसी विषय पर एक दूसरा इर्शादे नबवी (आदेश नबवी) बयान करते हैं "कोई शख्स अपना हाथ रूमाल से उस वक्त साफ न करे, जब तक अपनी उंगलियां चाट कर साफ न करले क्योंकि उसे क्या मालूम किस खाने में किस कदर बरकत है।"

इसी विषय पर हजरत इब्न अब्बास (रज़ि०) से रवायत है कि हुजूर (सल्ल०) ने फरमाया "जब तुम में से कोई शख्स खाना खा ले तो अपनी उंगलियां न पोछे जब तक उन्हें खुद न चाट ले या किसी को चटवा न ले,

इन पाक हदीसों में जिस बात की ताकीद (चेतावनी) की गयी है वह है खाने का एहतराम (सम्मान), खास तौर पर रोटी की इज्जत, रिज्क अल्लाह की नेमतों में बहुत बड़ी नेमत है। इसका सम्मान हर सूरत में जरूरी है, रोटी से हाथ पोछना, रोटी का अनादर है, इसलिए कि रोटी खाने के लिए है, हाथ साफ करने के लिए नहीं।

उंगलियां चाटना

कअब बिन मालिक का बेटा अपने बाप से रवायत करता है कि हजरत रसूलुल्लाह (सल्ल०) तीन बार उंगलियां चाटा करते थे।"

अनस रज़ि० से रवायत है कि "नबी करीम (सल्ल०) जब खाना खा चुकते तो अपनी तीनों उंगलियां चाटते, कअब बिन मालिक के एक बेटे अपने वालिद से इस तौर पर रवायत करते हैं कि "हजरत रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपनी तीन उंगलियों से खाना खाते थे और खाना खाने के बाद उनको चाट लेते थे" इन पाक हदीसों से दो बातें हमारे सामने आती हैं :–

१. एक यह कि हजरत रसूल मक़बूल (सल्ल०) खाना तीन उंगलियों से खाते थे, पूरा हाथ सालन से नहीं भर लेते थे, पाकीजगी (पवित्रता) की तरह सफाई (स्वच्छता) भी हुजूर (सल्ल०) की पहचान थी।

२. दूसरे यह कि खाने के बाद कपड़े से हाथ साफ करने और पानी से धोने से पहले अपनी मुबारक उंगलियां चाट लिया करते थे।

उंगलियां चाटना मानव प्रकृति के बिल्कुल अनुकूल है, हर बच्चा स्वाभाविक तौर पर अपना अंगूठा चूसता है। हकीमों का यह सर्वमान्य निर्णय है कि यह अमल हाज़िमे के लिए बहुत ज़रूरी है। दुर्भाग्य से नई सभ्यता में उंगलियां चाटना, बल्कि हाथ से खाना ही बुरा समझा जाने लगा है, लेकिन क्या जरूरी है कि हम अपनी अच्छी बातें दूसरी की नकल में छोड़ दें।

पसन्द व न पसन्द खाना

दुरूद व सलाम हो अल्लाह के नबी पर, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खाने में ऐब न निकालते थे, अगर खाना अच्छा लगता तो खा लेते वरना (खामोशी) से छोड़ देते थे।

हर आदमी को हर चीज यकसां तौर पर पसन्द नहीं होती, किसी को एक खाना पसन्द है किसी को दूसरा, यह एक प्राकृतिक बात है। लेकिन यह बात याद रखनी चाहिए कि रिज्क अल्लाह की नेअमत है इसमें कीड़े डालना, ऐब निकालना रिज्क की तौहीन है, सुन्नते नबवी की मुखालिफत अल्लाह करीम की नाशुकरी है हमें हरगिज ऐसा नहीं करना चाहिए ।

हजरत अबू हुरैरा रज़ि० अन्हु फरमाते हैं "कि हजरत रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कभी किसी खाने में ऐब नहीं निकाला, बल्कि अगर खुवाहिश होती तो खा लेते और अगर खुवाहिश न होती तो छोड़ देते।" (मुस्लिम व बुखारी)

इस सिलसिले में एक बुजुर्ग का वाकिआ पढ़िये, उनकी वफ़ात के बाद किसी ने उन्हें खुवाब में देखा और पूछा कैसी गुज़री? कहने लगे हिसाब किताब का मरहला आसानी से तै हो गया, पूछा कौन सी नेकी काम आई? जवाब दिया, बीवी ने एक दिन खिचड़ी पकाई थी और भूलकर बेतहाशा नमक

डाल दिया था, मैंने मुंह में लुकमा डाला तो गोया मुंह में जहर घुल गया, बेइख्तियार उगलना चाहिता था, खियाल आया अल्लाह की नेअमत है, बीवी से जरा भी शिकायत न की, और खिचड़ी खा ली, बस अल्लाह पाक को यही अदा पसन्द आ गई और बख़शिश का परवाना मिल गया।

दो या जियादा खानों में इन्तिखाब (चयन)

दो जहां के सरदार खत्मुर रूसुल (सल्ल०) ने जिस तंगी और फक्र व फ़ाके के सथ जिन्दगी बसर की है वह सबके इल्म में है, हजरत आइशा सिद्दीका रज़ि० अल्लाहु अन्हु के बयान के मुताबिक मुबारक जिन्दगी में ऐसा ज़माना कभी नहीं आया कि हफ़्ते के सात दिन चूल्हा गर्म हुआ हो। इस हाल में हुजूर (सल्ल०) के दस्तर ख़ुवान पर एक से ज़ियादा खाने शायद ही कभी आए होंगे– हम नालाइक़ उम्मती हैं कि उनके सदके अल्लाह करीम की बेशुमार नेअमतों से फाइदा उठाते हैं और ज़बान पर शुक्र का कलिमा नहीं लाते। हुजूर (सल्ल०) ने दस्तर ख़ुवान पर एक से ज़ियादा खानों की सूरत में क्या तरीक़ा इख्तियार किया, इसका हाल आपकी बीवी हजरत आइशा की जबानी सुनिये –''फरमाती हैं : रसूलुल्लाह पर अल्लाह का दुरूद व सलाम हो उनके सामने दो चीज़ों के बीच पसन्द नापसन्द का उसूल (नियम) इसके अलावा कुछ न था कि उनमें से जो ज़ियादा आसान होती उसका इन्तिखाब (चयन) फरमाते'' ।(बुखारी व मुस्लिम)

यह सिर्फ खाने का सवाल नहीं आप (सल्ल०) हर मआमले में सहल और आसान तरीके को पसन्द फरमाते थे। मुशकिल पसन्दी और सख़्तगीरी (कठिनता और कठोरता) कभी इख्तियार न करते।

एक बड़े दस्तर ख़ुवान पर खाने जियादा हों तो हमें क्या तरीक़ा इख्तियार करना चाहिए, इस सिलसिले में फरमाने नबवी है ''वह खाओ जो तुम्हारे करीबतर हो'' गोया लम्बे लम्बे हाथ मारना और दूसरों के आगे से उठाकर खाना इस्लामी आदाबे मआशिरत के विपरीत है, हमेशा अपने सामने की पलेट से खाना चाहिए।

0522-264646

Bombay Jewellers

The Complete Gold & Silver Shop

84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

Mob: 9415006053

Mohd. Irfan
Proprietor

न्यू करीम ज्वैलर्स

NEW KAREEM JEWELLERS

Shop No. 1 Balad Market, Opp. Ek Menara Masjid, Akbarigate, Lucknow. Ph.: (S) 2260890

मीठी बात करो रे भाई

प्रस्तुति : गुफ़रान नदवी

मीठी बात करो रे साथी
मीठी बात करो
मीठी बात से मीठे मीठे
दिन और रात करो
मीठी बात है रस के जैसी
सब के मन को भाए
मीठे मीठे बोल सुने तो
दुश्मन भी शरमाए
मीठी बात करो रे साथी
मीठिी बात है खुश्बू जैसी
महके ओर महकाये
जात पात, मजहब और भाषा
सबका फर्क मिटाए
मीठी बात करो रे साथी
मीठी बात है पानी जैसी
सबकी पियास बुझाए
दो मीठी बूंदों से मुर्दा दिल
जिन्दा हो जाए
मीठी बात करो रे साथी
मीठी बात हवा के जैसी
सबके काम आए
जिस गुन्चे को छूले
उसको फूल बनाती जाए
मीठी बात करो रे साथी
मीठी बात किरन जैसी है
चमके और चमकाए
यह होंटों से फूटे लेकिन
दिल में ज्योति जगाए
मीठी बात करो रे साथी
जीत, सफलता, इज्जत, शुहरत
मीठी बात के सदके
जीवन में दुन्या की राहत
मीठी बात के सदके
मीठी बात करो रे साथी
मीठी बात करो
मीठी बात से मीठे मीठे
दिन और रात करो

आपके प्रश्नों के उत्तर

इदारा

प्रश्न : हमारे वालिद, और दो चचा, साथ रहते हैं, साहिबे औलाद हैं। हम चचेरे भाई बहन बचपन से एक साथ खाते पीते, खेलते कूदते रहे अब हम लोग जवान हो गये, चचेरे भाई बहनों में परदा नहीं हो पा रहा है। बहनें चचा ज़ाद भाइयों को खाना पानी पेश करती हैं ज़रूरी व ग़ैर ज़रूरी बातें भी करती हैं। घर में गुंजाइश न होने और चचाज़ाद बहन भाईयों में परदे का रवाज न होने के सबब हम चचाज़ाद भाई बहनों में परदे में बड़ी दुशवारी हो रही है हल बताएं।

उत्तर : पहली बात तो यह समझ लें कि "सच्चा राही" में प्रश्नो के जो उत्तर दिये जाते हैं उनकी हैसियत फ़तवे की नहीं होती बस आप की मुश्किलात का हल (समस्याओं का समाधान) पेश किया जाता है। कोई मुफ़्ती उससे अलग बात बताए तो उसी को मान लें। कोशिश यही की जाती है कि आप की सहीह रहनुमाई की जाए।

चूंकि चचाज़ाद, ख़ालाज़ाद, मामूज़ाद, फूफीज़ाद, ब्रहन भाइयों में निकाह होता है इसलिए उनसे परदा भी है और इहतियात इसी में है कि चेहरे का परदा भी हो। लेकिन चूंकि बअ़ज़ उलमा का कहना है कि चेहरा, हथेलियों और क़दमों का परदा नहीं है इस लिए ऐसे चचाज़ाद भाई बहन जो बचपन से एक साथ रहे वह बहनें अगर ढीले ढाले कपड़ों में ऐसे भाइयों के सामने चेहरा खोलकर आ जाएं तो इसकी गुंजाइश है लेकिन चेहरे हथेलियों और क़दमों (पगों) के अलावा पूरा जिस्म ढीले कपड़ों से ढका हो, बाल स्कार्फ़ से बिल्कुल बन्द हों, लेकिन घर के लोगों की मौजूदगी में ऐसा हो तन्हाई हरगिज़ न हो, न ही फ़ुज़ूल बातें हों बस ज़रूरत की बात कर लें साथ ही मां बाप को चाहिए कि वह उन पर निगाह रखें और ज़रा भी आज़ादी लगे तो पूरे पर्दे का इहतिमाम (प्रबन्ध) करें। ऐसा करेंगे तो इन्शाअल्लाह गुनाहगार न होंगे।

प्रश्न : कुछ लोग कहते हैं कि चची के लिए अपने भतीजों से भी परदा है। चची तो मां की तरह है क्या उससे भी पर्दा है?

उत्तर : हां शरअ़ी हुक्म यही है कि चची अपने भतीजों से पर्दा करे, बेशक चची मां की तरह है इसी तरह बड़ी भावज भी मां की तरह है लेकिन दोनों से पर्दे का हुक्म है। दुश्वारी हो तो चची भतीजों के सामने और बड़ी भावज देवर के सामने चेहरा, हथेलियां और क़दम खोल कर आ सकती है बाक़ी सारा बदन ढका हो।

प्रश्न : मैंन देखा अब कुछ मुस्लिम लड़कियां स्कूटर कार वग़ैरा चलाती है, पूरा जिस्म ढका रहता है चेहरा भी ढका होता है सिर्फ़ आखें खुली होती हैं,सर भी ढका होता है लेकिन चोटी पीछे लटकती नज़र आती है क्या उनका यह पर्दा सहीह है?

उत्तर : बालों का पर्दा है ऐसी लड़कियों के लिए ज़रूरी है कि बालों को समेट कर स्कार्फ़ के अन्दर कर दें। लड़कियों के कार मोटर साइकिल, स्कूटर, साइकिल, अगरचि पर्दे के साथ चलाने में कोई हरज नहीं लेकिन लड़कियों का तन्हा बाहर निकलना ख़तरे से ख़ाली नहीं चाहिए कि महरम मर्दों के साथ निकलें, लेकिन अगर ७८ किमी० दूरी के लिये निकलें तब तो महरम का साथ होना अनिवार्य है।

प्रश्न : बैंक का सूद या बीमे की रक़म का प्रयोग किस तरह हो क्या उसे अपने बाल बच्चों पर ख़र्च कर सकते हैं?

उत्तर : अगर मजबूरन (हिफ़ाज़त के लिए या किसी और मजबूरी से) पैसे बैंक में रखना पड़ें और उन पर सूद मिले तो न तो उसे अपनी ज़ात पर ख़र्च करें नउन पर जिन का रोटी कपड़ा अपने ज़िम्मे है बल्कि सवाब की नीयत के बिना किसी ग़रीब को दे दें या किसी रिफ़ाही काम में लगा दें जैसे रास्ता पुल वग़ैरह। इन्कम टैक्स में भी दे सकते हैं। बीमा में मिली हुई ज़ाइद रक़म को इसी तरह ख़र्च करें। सूद या बीमे की ज़ाइद रक़म अपने इस्तिअ़माल में लाना बड़ा गुनाह है।

प्रश्न : हज की नीयत कब और किस तरह की जाती है?

उत्तर : जब पाक साफ़ बावुज़ू हो कर आम कपड़े उतार कर दो चादरें पहन लें, एक को लुंगी के तौर पर इस तरह पहने कि शरअ़ी सत्र हो जाए दूसरी चादर ऊपर से ओढ़कर दो रकअ़त नमाज़ पढ़लें तब खुले सर नियत करें, नियत दिल से ज़रूरी है: ज़ुबान से भी

(शेष पृष्ठ ३६ पर)

क़ुर्बानी और अक़ीक़ा

इदारा

हर साहिबे निसाब माल वाले पर बक़रईद में क़ुर्बानी करना वाजिब है। क़ुर्बानी का वक़्त १० ज़िल्हिज्जः को बक़रईद की नमाज़ के बअ्द से शुरू होकर १२ ज़िल्हिज्जः को मग़रिब से पहले तक रहता है। अहले हदीस हज़रात १३ की शाम तक क़ुर्बानी करते हैं। रात में करें चाहे दिन में, अलबत्ता रात में, रौशनी का इन्तिज़ाम होना चाहिए। बकरी, बकरा, भेड़, दुंबा, नर मादा की उम्र पूरे एक साल होना ज़रूरी है। इन में से एक जानवर की कुर्बानी एक आदमी की तरफ़ से होगी। भैंस, भैंसा की उम्रें दो साल होना चाहिए इन जानवरों में से एक जानवर में २, ३,४,५,६,७ आदमी तक शरीक हो सकते हैं। ऊंट की उम्र पांच साल होना चाहिए ऊंट में भी सात आदमी तक साझी हो सकते हैं। भारत में गाय की क़ुर्बानी फ़ित्ने का सबब बनती है लिहाज़ा मुसलमानों को चाहिए कि गाय की क़ुर्बानी हरगिज़ न करें। क़ुर्बानी का जानवर मोटा तगड़ा सिहतमंद होना चाहिए अगर्चि दुब्ले और कमज़ोर जानवर की क़ुर्बानी जाइज़ है बशर्तेकि इतना कमज़ोर न हो कि क़ुर्बान गाह तक चल कर न जा सके। जंगली जनवरों की क़ुर्बानी जाइज़ नहीं। लंगड़ा जानवर जो चलता फिरता हो उसकी क़ुर्बानी जाइज़ है। जिस जानवर के कान या दांत बिल्कुल न हों उस की क़ुर्बानी दुरूस्त नहीं, जिस जानवर का सींग जड़ से टूट गया हो उस की क़ुर्बानी दुरूस्त नहीं। लेकिन अगर थोड़ा सा टूटा हो तो उस की क़ुर्बानी जाइज है। जिस जानवर के सींग पैदाइशी तौर पर न निकले हों उस की क़ुर्बानी दुरूस्त है। क़ुर्बानी के जानवर की उम्र का यक़ीनी इल्म न हो सके तो उस के दान्त देख लें जिस को इस्तिलाहन दान्तना बोलते हैं। जब बकरी बकरा वगैरा एक साल के हो जाते हैं तो उनके अगले दान्तों में से दो बड़े दान्त निकल आते हैं। बड़े जानवर भैंस भैंसा वगैरह दो साल में दान्तते हैं जब कि ऊंट पांच साल में दान्ता है। दान्ता जानवर क़ुर्बानी की उम्र को पहुंच जाता है।

क़ुर्बानी का तरीका :

अपनी कुर्बानी अपने हाथ से ज़ब्ह करना चाहिए औरतें भी अपनी क़ुर्बानी अपने हाथ से ज़ब्ह कर सकती हैं। दूसरे से भी ज़ब्ह करवाया जा सकता है। बअ्ज़ लोग ज़ब्ह से पहले बकरे को नहलाते हैं यह फ़ुज़ूल सी बात है और जानवर को बे ज़रूरत तकलीफ़ देना है। बअ्ज़ लोग ज़ब्ह से पहले बकरे के मुंह में पान में कोई सिक्का रखते हैं, ऐसा हरगिज न करना चाहिए इसका शुमार दीन में इज़ाफ़ा करने में होगा जिस का अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बअ्द किसी को हक़ नही।

जब क़ुर्बानी करना चाहें जानवर को क़ुर्बानी के इरादे से क़िब्ला रू लिटा दें बड़ा जानवर हो तो पैरों को बान्ध दें और दो एक लोग उसे दबा लें, छोटा जानवर बकरी बकरा वग़ैरा को गिराकर दो एक लोग पकड़ लें। फिर क़ुर्बानी करने वाला तेज़ छुरी से बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर कह कर ज़ब्ह कर दे ज़ब्ह के बअ्द कहे ऐ अल्लाह इस क़ुर्बानी को मेरी तरफ़ से क़ुबूल फ़रमा लीजिए। अगर दूसरे की तरफ़ से क़ुर्बानी कर रहा है तो कहे ऐ अल्लाह इस क़ुर्बानी को फ़ुला (उसका नाम लेकर) की तरफ से क़ुबूल कर लीजिए अगर बड़े जानवर में कई लोग शरीक है तो हर एक का नाम लेकर कहे कि फुलां फुलां की जानिब से क़बूल फ़रमा बस क़ुर्बानी हो गई। अगर बअ्द में यह दुआ न करें पहले ही से यह इरादा कर लें कि यह क़ुर्बानी फ़ुलां फ़ुलां की जानिब से है फिर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर कह कर ज़ब्ह कर दें तब भी क़ुर्बानी हो जाएगी।

क़ुर्बानी की दुआएं :—

ज़ब्ह से पहले यह दुआ पढ़ें — जबानी याद न हो तो देख कर भी पढ़ सकते हैं

इन्नी वज्जहतु वजहिय लिल्लज़ी फ़तरस्मावाति वल् अर्ज़ हनीफ़ंव्वमा अना मिनल्मुश्रिकीन्। इन्न सलाती व नुसुकी व महयाय व ममाती लिल्लाहि रब्बिल आलमीन। ला शरीक लहू व बिज़ालिक उमिर्तु वअनामिनल् मुस्लिमीन्। अल्लाहुम्म मिन्क व लक।

फिर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर पढ़कर ज़ब्ह करना चाहिए, —जितने लोग पकड़ने में शरीक हैंसब की ज़बान से बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर निकले। ज़ब्ह के बअ्द अगर अपनी तरफ़ से ज़ब्ह किया है तो यह

पढ़ें:

अल्लाहुम्म तक़ब्बल मिन्नी कमा तक़ब्बल्त मिन हबीबिक मुहम्मदिंव्व ख़लीलिक इब्राहीम अलैहिमस्सलातु वस्सलाम।

इन अरबी दुआओं को जो हिन्दी में लिखी गई पढ़े लिखे दीन्दार को सुना लेना ज़रूरी है वरना ग़लत पढ़ने से तो न पढ़ना अच्छा है इसलिए कि इनका पढ़ना ज़रूरी तो है नहीं। इन दुआओं में जिन अक्षरों के नीचे हलन्त नहीं है न वह किसी मात्रा से जुड़े हैं उनको गतिशील (उर्दू के जबर की तरह) पढ़ें।

क़ुर्बानी का गोश्त :

ज़ब्ह के बअ्द अगर बड़ा जानवर है और उसमें कई लोग शरीक हों तो सब लोग बराबर बराबर बांट लें। अगर साझीदार एक साथ खाने पीने और रहने वाले हैं तो बांटने की ज़रूरत नहीं। मुस्तहब यह है कि गोश्त का एक तिहाई ग़रीबों में तक़सीम हो, एक तिहाई रिश्तेदारों में और एक तिहाई अपने घर वाले खाएं। लेकिन अगर घर में ज़ियादा खाने वाले हैं और सारा गोश्त घर वाले ही खा लेते हैं तो इसमें भी कोई हरज नहीं है। दूसरे को हदिया भेजने और ग़रीबों को देने का जो फ़ाइदा है उससे बहर हाल हाथ धोना पड़ेगा। आप अपने ग़ैर मुस्लिम पड़ोसी को अगर वह गोश्त ख़ोर हो तो क़ुर्बानी का गोश्त पेश कर सकते हैं।

क़ुर्बानी की खाल :

क़ुर्बानी की खाल से अगर अपनी ज़रूरत की कोई चीज़ जैसे डोल, छलनी मश्कीज़ा मुसल्ला वग़ैरह बना कर इस्तिअ़माल करें तो यह जाइज़ है लेकिन अगर खाल बिकी तो उसकी क़ीमत ग़रीब मुसलमानों का हक़ है। क़ुर्बानी की खाल से ढोल, ताशा बनाना दुरूस्त नहीं, हां जो ख़रीद ले तो वह उसका मालिक है जो चाहे करे।

अ़क़ीक़ा :

जब मुसलमान के घर बच्चा पैदा हो तो सातवें दिना बच्चे का नाम रखें सरके बाल उतरवा दें और एक बकरी या बकरा फ़िदये में ज़ब्ह करें इस को अ़क़ीक़ा कहते है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत हसन और फिर हज़रत हुसैन (रज़ि०) का अ़क़ीक़ा किया था इस लिये अगर ग़ुरबत रूकावट न बन रही हो तो अ़क़ीक़ा करना चाहिए बच्चा हो तो दो बकरियां या बकरे ज़ब्ह करे और बच्ची के लिए एक बच्चे के लिए भी अगर एक बकरी या बकरा ज़ब्ह करें तो कोई हरज नहीं। क़ुर्बानी में अ़क़ीक़े का हिस्सा लिया जा सकता है लड़के के लिए दो हिस्से और लड़की के लिए एक हिस्सा और चाहें तो लडके के लिए भी एक हिस्सा लें।

अ़क़ीक़ा अगर सातवें दिन न कर सकें बअ्द में करें तो अच्छा यह है कि सातवें दिन का लिहाज रखें उसकी तरकीब यह है कि बच्चे की पैदाइश का दिन याद रखें और उससे एक दिन पहले जानवर ज़ब्ह कर दें जैसे बच्चा जुमिअ़रात को पैदा हुआ तो जब भी उसका अ़क़ीक़ा करें बुद्ध को करें। क़ुर्बानी में अ़क़ीक़े का हिस्सा लिया और क़ुर्बानी ऐसे दिन हुई कि बच्चे की पैदाइश का सातवां दिन न था तब भी कोई हरज नहीं।

अ़क़ीक़े की खाल और गोश्त का इस्तिअ़माल क़ुर्बानी की खाल और गोश्त की तरह होगा यह जो मशहूर है कि अ़क़ीक़े का गोश्त नाना नानी नहीं खा सकते यह ग़लत मशहूर है। खा सकते हैं। ज़ब्ह के वक़्त अ़क़ीक़े की नीयत कर के बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कह कर ज़ब्ह कर देना काफ़ी है। ज़ियादा सवाब के लिए ज़ब्ह से पहले वही दुआ पढ़े जो क़ुर्बानी में लिखी गई और बअ्द में यह दुआ पढ़ें:

अल्लाहुम्म हाज़िही अ़क़ीक़तु (फ़ुलां इब्नि फ़ुलां) दमुहा बिदमिही अ़ज़्मुहा बिअ़ज़्मिही, जिल्दुहा बिजिल्दिही, शअ़रूहा। बिशअ़रिही फतक़ब्बलहा वज्अ़ल्हा फ़िदाअन् लहू। (फ़ुलां इब्नु फ़ुलां की जगह बच्चे और बाप का नाम लें)

अगर लड़की हो तो यह दुआ पढ़ें :

अल्लाहुम्म हाज़िही अ़क़ीक़तु (फ़ुलानातु बिन्तु फ़ुलां—फ़ुलानतु की जगह लड़की का और फ़ुलां की जगह उस के बाप का नाम लें) दमुहा बिदमिहा, अ़ज़्मुहा बिअ़ज़्मिहा, जिल्दुहा बिजिल्दिहा, शअ़रूहा बिशअ़रिहा फतक़ब्बलहा वज्अ़ल्हा फ़िदाअन् लहा।

अनुरोध

लेखकों से अनुरोध है कि वह पन्ने के एक ओर लिखें, एक लाइन की दूरी देकर लिखें, सुन्दर तथा सरल लिखें। सुन्दर न लिख सकें तो इस प्रकार साफ़ साफ़ और खुला खुला लिखें कि कम्पोज़ीटर को कठिनाई न हो।

पाठकों से अनुरोध है कि वह जब तब एक कार्ड भेजकर बताया करें कि "सच्चा राही" की सेवाएं आप को कैसी लग रही हैं।

—सम्पादक

जिज्ञासा का जवाब

इदारा

सांगली (महाराष्ट्रा) से एक पर्चा "सनातन प्रभात" मराठी में निकलता है। उसकी फोटोकापी हमारे एक पाठक "मूसा सय्यद हसन ने भेजी है। हमने उस का अनुवाद करवाया तो उसे पढ़कर बड़ा खेद हुआ। व्यास जी की भविष्य पुराण हमारे सामने है इसमें कहीं भी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का जिक्र नही है। लेखक ने धोखा देते हुए हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शान में जो गुस्ताखी की है उसका बदला लेने को हमारा अल्लाह काफी है। लेखक किसी दैवी पकड़ की प्रतीक्षा करें। हमारी हुकूमत को भी इस ओर ध्यान देना चाहिए और ऐसा जहर उगलने वालों को दण्ड देना चाहिए। मैं किसी की बुराई करना पसन्द नहीं करता परन्तु मैं "सनातन प्रभात" के सम्पादक से प्रश्न करता हूं कि वेद व्यास जी की माता सत्यवती कौन थी? और वेद व्यासजी के पिता पाराशर ऋषि का सम्बन्ध सत्यवती से किस प्रकार हुआ था?

अभी अक्टूबर और नवम्बर के "सच्चा राही" के अंकों में दो पंडितों के वार्तालाप में जो अंश कुछ वाद विवाद का कारण बन सकता था, उसे निकाल दिया था, उससे मेरा सहमत होना आवश्यक नहीं है। परन्तु अब उसे छाप रहा हूं ताकिं हमारे पाठक भविष्य पुराण से सम्बन्ध बताने वाली झूठीबात से इस सच्ची बात का मुक़ाबला कर लें जो उसका विलोम है।

दो पंडितों की बातचीत :

पंडित विष्णुदास : पण्डित जी, 'कल्कि' के भविष्य में अवतार होने का उल्लेख वेद–पुराणादि में कहा गया है। एवं वही ईशदूत अन्तिम हैं। तो क्या आप "मुहम्मद"साहब को शेष (अन्तिम) ईशदूत मानते हैं?

पं.हरदयाल अवश्य : मैं तो हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सृष्टिकर्ता (ईश्वर/अल्लाह) द्वारा भेजा गया अन्तिम ईशदूत मानता हूं। क्योंकि यह परिपूर्ण वैदिक सत्य है।

पं. विष्णुदास : किस प्रकार वैदिक सत्य है। यह तो मेरी समझ में नहीं आया है। क्योंकि वह तो भविष्य है।

पं. हरदयाल : पण्डित जी जब ग्रंथ संकलन हुआ था, उस समय "कल्कि' (अन्तिम ईशदूत) वास्तविक रूप से भविश्य ही थे। वह भविष्य कथन वर्तमान होकर आज से बहुत दिन पहले अतीत हो गया है। वह "कल्कि" ही मुहम्मद (सल्ल०) हैं।

पं०विष्णुदास : क्या आपके पास इस कथन का कुछ प्रमाण है? जो कि प्रमाण मान लेने के उपयुक्त हो?

पं. हरदयाल : इस कथन का प्रमाण वेद उपनिषद,एवं पुराण तीनों ग्रन्थों में वर्णन है। आप पण्डित हैं। इसलिए संक्षेप में ही समझ जायेंगे। वेद मंत्र में नराशंस नाम कहा गया है, नराशंस ईश्वर द्वारा प्रसंशित नर (मनुष्य) अर्थात ईशदूत। ऋक, साम, यजु एवं अथर्व वेद संहिता में एकाधिक नराशंस का उल्लेख है। अर्थात अनेक ईशदूत कहा गया है। इसी प्रकार अंतिम नराशंस (कल्कि) या भविष्य ईशदूत के लिए अथर्ववेद संहिता में भविष्यवाणी भी की गयी है। यह कथन अथर्ववेद संहिता २० काण्ड 'कुन्ताप–सूक्त' में पाया जाता है। इस सूक्त में ३० ऋक (मंत्रों) में वर्णन है।

पं.विष्णुदास : कुछ पण्डित तो इस सूक्त को प्रक्षिप्त मानते हैं। प्रक्षिप्त वर्णन को तो प्रमाणिक नहीं माना जायेगा।

पं. हरदयाल : ऋक वेद संहिता के एक ब्राहमण ग्रन्थ का नाम ऐतरिय ब्रहमण है। इस ब्राहमण ग्रन्थ के अनुसार पाप से मुक्त होने के लिए उक्त सूक्त (कुन्ताप–सूक्त) का प्रयोग किया गया है। इसी सूक्त मंत्र द्वारा हवन कार्य भी इसी ब्राहमण ग्रंथ में अनुमोदित हैं पंडित जी आप का अन्दाज सत्य होता तो ऋक–ब्राहमण ग्रन्थ में उस मंत्र का प्रभाव होता ही नहीं। (ऐतरेय ब्राहमण ६ पंन्चिता ५ अध्याय ६–१० खण्ड)

अल्लोपनिषद में तो स्पष्टतः हजरत मुहम्मद (सल्ल०) को अल्लाह का रसूल कहा गया है। विभिन्न पुराण एवं उप पुराण में 'कल्कि' का वर्णन पाया जाता है। 'कल्कि' के विषय में एक स्वतन्त्र पुराण ही है, उस पुराण का नाम 'कल्कि पुराण' है। इस ग्रन्थ में भी कुछ वर्णन पाया जाता है।

लेकिन एक बात स्मरण रखना है कि संस्कृत एवं अन्य भाषा में पृथक है, दोनों ही का अनुवाद करके विचार

करें। भाषा में पृथक होकर "नराशंस' एंव 'मुहम्मद' दोनों शब्द का अर्थ एक ही है।

पं. विष्णुदास : अच्छा, अगर वह वेद में भविष्यवाणी किये गये अन्तिम 'नराशंस' ही हैं, तो वैदिक समाज में क्यों पैदा नही हुए?

पं.हरदयाल : इस बात से आप क्या कहना चाहते हैं?

पं.विष्णुदास : ईशदूत होकर म्लेच्छ में जन्म लिया?

पं.हरदयाल : अन्तिम ईशदूत से पहले जितने भी ईशदूत हुए हैं। उनमें से प्रायः सभी ईशदूत किसी निर्दिष्ट स्थान या गोत्र तथा जाति के लिए आये थे। लेकिन समग्र विश्व के लिए आये अन्तिम ईशदूत किसी भी स्थान एवं गोत्र के लिए निर्दिष्ट नही है। अतः समग्र विश्व में से किसी भी स्थान एवं जाति में जन्म हो सकता है।

दूसरी एक बात और है, कि महाजल प्लावन में जब मनु जी की नाव में चढ़ने वालों को छोड़कर कोई बचा ही नहीं था। तो अब जितने भी मनुष्य हैं। सभी तो उन्हीं की सन्तान हैं। नाव में तो कोई म्लेच्छ था ही नहीं।

इस कथन का प्रमाण मनुस्मृति का एक श्लोक है। –

शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः क्षत्रिय जातयः।

वृषलत्वं गता लोके ब्राहमणादर्शनेन च।।

(मनुस्मृति १०/४३)

मूलतः आचार हीन क्षत्रिय अथवा वैदिक आचार हीन ही को म्लेच्छ कहा जाता था।

सुरेश चन्द्र बन्दोपाध्याय सम्पादित मनुस्मृति (कलकत्ता संस्करण) ने भूमिका में विस्तार वर्णन किया है। एवं मनुस्मृति १० ४४–४५ श्लोक में भी देखा जा सकता है।

पं. विष्णुदास : अर्थात आपका कहना है कि जिसको हम म्लेच्छ समझते हैं। वास्तव में वह क्षत्रिय अथवा और कोई आर्य जाति थे। वेदाचार छोड़ने के कारण पृथक हो गये। धर्माचरण बदल गया लेकिन खून में आर्य ही हैं।

पं. हरदयाल : आपकी वार्तालाप से मैं पूर्णतया सन्तुष्ट हूं। भविष्य में भी ऐसी वार्तालाप होती रहेगी।

नबवी मुआ़शरत की बुन्याद

हुजूरे अकरम (स०अ०) की मुआशरत की बुन्याद पाकीजगी सादगी और हया पर है, और यहूद व नसारा की लाई हुई मुआशरत की बुन्याद बेहयाई इस्राफ व तअय्युश पर है। तुम्हें उनकी मुआशरत पसन्द आने लगी। जिन्होंने तुम्हारे अस्लाफ के खून बहाए, इस्मतें लूटीं, मुल्क छीने और अब भी तुम्हें इम्दाद देकर इस तरह पाल रहे हैं जिस तरह तुम मुर्गियां पालते हो। (यअ़नी जब्ह करने के लिए) और जिस ने तुम्हारे लिये खून बहाया दान्त शहीद कराए हम्जा जैसें चचा शहीद कराए, तुम्हारे लिये रातें जगाते गुजारीं उन की मुआशरत तुम्हें पसन्द न आई।

दोस्तो ! हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुआशरत भी कियामत तक के लिए है, जैसें उनकी नुबूवत कियामत तक के लिए है। जब तुम में नूरे ईमान आएगा तो तुम्हें हुजूर अकरम की मुआशरत की एक एक चीज प्यारी लगेगी।

(मौलाना यूसुफ कांन्धिलवी)

दुआए मग़्फ़िरत

सच्चा राही के एक एजेन्ट जनाब आरिफ अली अन्सारी खैराबादी के वालिद जनाब हाजी जामिन अली अन्सारी का ८ रमजान को इन्तिकाल हो गया। पाठकों से उनके लिए मग्फिरत की दुआ की दर्ख्वास्त है। इदारा उनके गम में शरीक और उनके लिए दुआए मग्फिरत और मुतअल्लिकीन के लिए दुआ गो है।

(पृष्ठ ३२ का शेष)

कह लें। नीयत के अलफ़ाज़ :

अगर सिर्फ़ ह़ज्ज करना हो जिसे ह़ज्जे इफ़राद कहते हैं तो कहें "ऐ अल्लाह मैं ह़ज्ज की नीयत करता हूं, इसे मेरे लिए आसान कर दे और क़बूल फ़रमा ले।

अगर सिर्फ़ उ़म्रे का इरादा हो, जो ह़ज्जे तमत्तुअ़ में होता है या दर्मियान साल में सिर्फ़ उ़म्रे के लिये जाया जाता है तो कहें "ऐ अल्लाह मैं उ़म्रे की नीयत करता हूं, इसे मेरे लिये आसान कर दे और मेरी तरफ़ से क़बूल फ़रमा ले। अगर उ़म्रा व ह़ज्ज दोनों एक साथ करना हो जिसे ह़ज्जे क़िराम कहते हैं तो कहे "ऐ अल्लाह मैं उ़म्रा व ह़ज्ज दोनों की नीयत करता हूं, इनको मेरे लिए आसान कर दे और मेरी तरफ़ से क़बूल फ़रमा ले।

नीयत के फ़ौरन बाद जोर से तीन बार पढ़ें : लब्बैक् अल्लाहुम्म लब्बैक् लब्बैक् लाशरीक लक लब्बैक् इन्नल्हम्द वन्निअ़मत लक वलमुल्क् लाशरीक लक्। बस अब आप इह़राम में आ गये अब इह़राम की पाबंन्दियां आप पर लागू हो गईं जिन्हें आप ह़ज्ज की किताबों में पढ़ ले या जानकारों से मालूम कर लें।

गाइडों द्वारा ऐतिहासिक स्थलों का हिन्दूकरण !

प्रो० गुमनाम सिंह मुक्तसर

मैंने आधे देश में ऐतिहासिक स्थानों की यात्रा की और हर जगह एक खास बात नोट की। हर ऐतिहासिक स्थान पर कुछ लोग खुद ही लोगों को गाइड करने लगते हैं। कभी मौका मिले तो वहां तैनात सुरक्षाकर्मी भी यह फर्ज पूरा करने लगते हैं।

हर जगह यह कहा जाता है कि यह हिन्दुओं का स्थान था या धर्मस्थल था, फुलां हिन्दू राजा या धर्मात्मा यहां निवास करते थे और मुसलमानों ने इस पर कब्जा जमा लिया, इसको तोड़–फोड़ कर इसकी बनावट बदल दी। चाहे आप अजंता एलोरा की गुफाओं में हों या औरंगाबाद के किले में, चाहे आगरे के ताजमहल में या दिल्ली के कुतुबमीनार के पास। हर जगह मुसमानों के खिलाफ प्रचार करते हुए लोग जरूर मिल जाएंगे।

अजंता की गुफाओं में हमने तथागत बुद्ध के नजदीक कई त्रिशूल खुदे देखे। हमने सिपाहियों से पूछा कि यह कैसे हो गया? उनका उत्तर था, ऐसा ही होगा। वहां एक ब्राह्मण हर आदमी की ओर देखता मिला, वह अन्दर आकर हमें बताने लगा कि ब्राह्मण कैसे कमल में निवास करता है और विष्णु जिसके अवतार बुद्ध हैं वे कैसे शरीर के सुवासों में निवास करते हैं और कैसे योग से प्रकट होते हैं। जब एलोरा की गुफाओं में गये तो सिपाही बुद्ध में विष्णु और गणेश की कथा कहने लगा।

बनारस में हमने जब एक बौद्ध विहार में पांव रखा तो नेपाल का एक ब्राह्मण, जो नेपाली बौद्धिस्ट और बौद्ध सोसाइटी का प्रोफेसर था, हमें बताने लगा कि इस बौद्ध विहार को मुसलमन हमलाआवरों ने खंडहर बना दिया था, मगर हम जानते थे कि उस बौद्ध विहार को तो एक हिन्दू राजा ने तबाह किया था, जिसका नाम क्रम और समय वहां उकेरा हुआ है।

जब भारत सरकार द्वारा स्थापित एक बौद्ध म्यूजियम में गये तो एक तिलकधारी प्रोफेसर वहां रखी प्रत्येक मूर्ति और बौद्ध निशान के विषय में विदेशियों को अंग्रेजी भाषा में उल्टी सीधी बातें बता रहा था।

पंजाब में भी सिखों को यह कहते सुना जा सकता है कि, "मुसलमानों ने देश को तो क्या पूरी दुनिया को तबाह कर दिया है।" अशोक सिंघल तो बाकायदा यह कहते हैं कि "देश में जाति पात और छूत–छात मुसलमानों ने फैलायी है,ऐसा उन्होंने हिन्दुओं को तोड़ने और हिन्दुस्तान पर अपना राज्य स्थापित करने के लिए किया।

पूरे देश में हम जहां भी जाएं हर जगह किसी न किसी पब्लिक प्लेस पर हमें ऐसा सुनने को जरूर मिल जाएगा। कलाई पर धागे की खंभनी बांधे या माथे पर तिलक लगाये कोई न कोई आपको इतिहास बताने आगे आ जाएगा।

गर्दूं पर अन गिनत फ़िरिश्ते थर थर कांप रहे थे

ताजुद्दीन अशअर रामनगरी

बूढ़ा परदेसी पैगंबर, रूख पे तक़द्दुस बिखरा बिखरा
गर्द आलूद परेशां चेहरा, फिर भी नूर से निखरा निखरा
शाम के देस से पैदल चल कर आज हिजाज़ में आया है यह
नेक उमंगें, पाक इरादे साथ में अपने लाया है यह
हद्दे नज़र तक हू का आलम, गांव व बस्ती पेड़ न इन्सां
लम्बा रस्ता, धूप की तेज़ी, रेत के जलते भुन्ते मैदां
एक खजूरों की थैली और इक मश्कीज़ा हाथ में है
बीवी सब्र व शुक्र की मूरत पीछे पीछे साथ में है
जीवन साथी की गोदी में नन्नहा सा इक बच्चा है।
बच्चा है या नूर का पैकर, इक मअ़सूम फ़िरिश्ता है
मुखड़े पर यूं खेल रहा है एक तबस्सुम हलका हलका
पिछले पहर चश्मे के अन्दर जैसे खिला हो फूल कंवल का
नन्नहे मुन्ने से मुखड़े पर एक निराला भोलापन है
मां की पुर–शफ़क़त गोदी में कितना ख़ुश है, कैसा मगन है
भोला भाला फूल सा बच्चा, बाप के दिल का सहारा है
मां उस पर वारी जाती है, उसकी आंख का तारा है
जाने कितनी दुआओं ने रहमत का दर खड़काया है
मां की सूनी गोद ने यह अन्मोल रतन तब पाया है
दोनों अपने लाल की हर मअ़सूम अदा पर मरते हैं
दोनों अपनी जान से बढ़कर उससे महब्बत करते हैं
प्रेम डगर में इस राही पर कैसे कैसे संकट आए
लेकिन इक पल की खातिर भी उसके पांव नहीं थर्राए
अपना सब कुछ मालिक की मरज़ी पर भेंट चढ़ाया उसने
आगे मौत खड़ी थी तब भी पीछे पग न हटाया उसने
उस पर जो भी बिपता बीती, उसको हंसकर झेल गया वह
आग के शोलों के अन्दर भी जान की बाज़ी खेल गया वह

बाप ने अपने घर से निकाला, कौम ने अत्याचार किया
राजा ने अगनी में डाला, जीना तक दुश्वार किया
देस से निकला, मिस्र में पहुंचा, सत्य उपदेश सुनाने को
रब ने जो पैग़ाम दिया था बन्दों तक पहुंचाने को
राजा प्रजा का रखवाला, खुदही वहां बटमार हुआ
परदेसी की लाज को लूटे, उसके लिये तैयार हुआ
बेबस होकर मिस्र को छोड़ा, आख़िर इक दिन शाम आया
लेकिन अब भी उस बन्दे को चैन न कुछ आराम आया
उसने नहीं खेती बाड़ी की और न कोई व्यापार किया
शाम में जितने रोज़ रहा, सच्चाई का प्रचार किया
शम के देस से पैदल चलकर आज हिज़ाज़ में आया है यह
नेक उमंगें, पाक इरादे साथ में अपने लाया है यह

इब्राहीम अलैहिस्सलाम बीवी और बच्चे को मक्का के चटयल और बंजर मैदान में (नज़रों से ओझल)हरम के क़रीब लाकर छोड़ दिया ताकि वहां तौहीद और ख़ुदा परस्तो का एक मरकज़ (केन्द्र) क़ाइम करें और ख़ुद वापस लौट जाते हैं कि मुल्क शाम वग़ैरह में तब्लीग़ व दावत का काम अन्जाम दें, इस्माईल अलैहिस्सलाम की मां अपने को तनहा पाकर घबराती हैं और शौहर को पुकारती हैं जो कुछ दूर पहुंचकर पीछे मुड़ के बीवी और बच्चे को महब्बत भरी नजरों से देखते जा रहे हैं।

ऐ मेरे सरताज ! किधर हमसे मुंह मोड़े जाते हो?
इस जंगल में हम दोनों को किस पर छोड़े जाते हो?
यह थोड़ा सा खाना पानी कब तक साथ निभाएगा ?
मेरी छातीा सूख गई तो यह बच्चा मर जाएगा।
मैं बेचारी अबला नारी – आख़िर क्या कर सकती हूं
इस माअ़सूम के जीवन की कैसे रक्षा कर सकती हूं।

हां हमको यूं छोड़ के जाना गर ईमाए यजदां है
तब जाओ,कुछ फ़िक्र नहीं अपना अल्लाह निगेहबां है

कई वर्षों बाद हज़रत इबराहीम (अ०) मक्का वापस आते हैं और बाल बच्चों के साथ रहने लगते हैं एक रोज़ हज़रत इस्माईल से मुख़ातब होकर फ़रमाते हैं –

इस्माईल ! ऐ लाडले बेटे ! राहते मादर! जाने पिदर !
मेरे सोला साल के गबरू ! दिल के टुकड़े लख्ते जिगर ।
तुझ को कैसे बताऊ मैं, तू मुझको कितना प्यारा है
ज्योति है मेरी आंखों की, बूढ़ी बाहों का सहारा है
मेरे लाल इजाज़त दे, तुझको इक बात सुनाऊं मैं
सपना जो मैंने देखा है पिछली रात, बताऊ मैं
देखा है कि पूरा मैं अल्लाह का फ़रमां करता हूं
हुक्मे ख़ुदा से राहे ख़ुदा में तुझको क़ुरबां करता हूं
यह तो मेरा ख्वाब हुआ, अब तू यह बता क्या कहता है?
फ़र्ज़ को पूरा करता है या अक़्ल की रौ में बहता है?

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम जवाब देते हैं –

अब्बा जान! ज़हे किस्मत जो आज यह साअ़त आई है
अपने ग़ुलाम पे आक़ा ने रहमत की नज़र फ़रमाई है।
मालिक की मरजी के आगे जान की कुछ अवकात नहीं
जिसने दी वह मांग रहा है, कोई बड़ी यह बात नहीं
मेरा तन मेरा जीवन, सब कुछ मालिक को अर्पण है
आप छुरी लें, हाथों में यह हाज़िर मेरी गरदन है।

बाप बेटे हुक्मे खुदावन्दी की तअ़मील के लिए कमरबस्ता होकर सुनसान वियाबान में पहुंचते हैं हज़रत इस्माईल ख़ुद ज़मीन पर लेट जाते हैं और हज़रत इब्राहीम छुरी की तेज धार बेटे के नर्म व नाजुक गले पर रख देते हैं (अल्लाह की सलामती हो उन दोनों पर) और तब –

फटने लगी कौनेन की छाती देख के यह दिलदोज़ नज़ारा
जंगल चुप चुप धरती गुम सुम अ़म्बर का दिल पारा पारा
नब्ज़े दौरां साकित सामित, वक्त का धारा मदधिम मदधिम
चश्मे गीती गिरयां गिरयां, ज़ुल्फ़े हस्ती बरहम बरहम
जंगल के सब पंख पखेरू चीख़ रहे थे हांप रहे थे
गरदूं पर अनगिनत फ़िरिश्ते थर थर थर थर कांप रहे थे
दश्ते नीली फ़ाम का राही चलते चलते ठहर गया था
फ़रशे ज़मीं से अ़रशे बरीं तक इक शोरे फ़रयाद बपा था
ख़्वाब हक़ीक़त के सांचे में सचमुच ढलने ही वाला था
बाप का ख़ंजर बेटे के हलक़ूम पे चलने ही वाला था
इतने में यह सौते ग़ैबी आई हरीमे कुद्स के दर से
मेरे ख़लील! उठा ले जल्दी अपना खंजर हलके पिसर से
हमको तेरे नूरे नज़र की क़ुरबानी मतलूब नहीं है
जिस बन्दे से प्यार है तुझको क्या वह मुझे महबूब नहीं है
जांच फ़क़त करनी थी हमको तेरे खुलूसो इश्को वफ़ा की
तू इस जांच में पूरा उतरा, ख़्वाब को ख़ुद तअ़बीर अ़ता की
दुन्या की आइन्दा नसलें यह क़ुरबानी याद करेंगी
तस्लीमो ईसार की यह बेमिस्ल कहानी याद करेंगी
फ़रशे ज़मीं पर दौर में जब तक चरखे नीली फ़ाम रहेगा
इन्सानों की इस दुन्या में ज़िन्दा तेरा नाम रहेगा
तुझको इमामत हासिल होगी, कौमों का सरदार बनेगा
तेरा उस्वह इस्लामो ईमान का इक मिअ़यार बनेगा

(पृष्ठ १३ का शेष)

बिरह की अग्नि में पल–पल जलती हूं
अब तो सांसे तेरी माला जपती हैं
मोरी धड़कने बन्द हुई चली जाती हैं
शब्द नहीं देते साथ, मोरी अखियां बन्द हुई जाती हैं।
न कौनूं बुलाता न कोई सन्देसा, तैबा से आये
हाय मन मोरा तरसे।
मोरे तन को चले हैं जो दफनाने मिट्टी में
ये समझें हैं जग वाले मर गई हूं मैं।
न जाने दुनिया कि, प्रीतम के सपनों में सो गई हूं मैं
खोलूं न अखियां चाहे जगा ले मोहे कितना
मिट के खाक भी मोरी (मरयम) पहुंच जाएगी मदीना
न कौनू बुलाता न कोई सन्देसा, तैबा से आये
हाय मन मोरा तरसो।

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

हबीबुल्लाह आजमी

इस्लाम सबसे तेज फैलने वाला धर्म :

ईसाई इंसाईक्लोपीडिया ने एक रिपोर्ट में जिस को ईसाई मिशनरी मूहमेंट ने प्रकाशित किया है इस बात को स्वीकार किया है कि मुसलमानों की संख्या ईसाइयों के मुकाबले में बहुत तेजी से बढ़ रही है। १९६० में मुसलमानों की संख्या पूरी दुन्या में १५.३ बिलयन थी। आज उनकी संख्या ५.८६ बिलयन है। इसके मुकाबले में ईसाइयों की जनसंख्या में केवल २ प्रतिशत की वृद्धि हुई है उनकी संख्या १९६० में ३३.६ प्रतिशत थी और इस समय ३३.६ प्रतिशत है। रिपोर्ट में इस बात को स्पष्ट किया गया है कि ब्रिटेन में बाइबिल पढ़ने वालों की संख्या बहुत कम है। रोजाना बाइबिल पढ़ने और चर्च जाने वाले केवल १५ प्रतिशत हैं और वह लोग जो हफने में एक बार जाते हैं ६ प्रतिश हैं और साल में कभी कभी आने वाले १८ प्रतिशत है।

यही कारण है कि अमेरिका की हारवर्ड विश्वविद्यालय एक रिसर्च स्कालर डायना पिक ने जो विभिन्ना धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन कर रही है एक शोधपत्र (तहकीक मकाला) पेश किया है जिसमें उन्होंने साबित किया है कि हाल के चन्द वर्षों में अमेरिका में सबसे तेजी से फैलने वाला धर्म इस्लाम है।

मैकसिको में तीन सौ लोगों ने इस्लाम धर्म कुबूल किया –

दक्षिणी मैकसिको के स्टेट "च्याबास" में लगभग तीन सौ लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया। इनमें एक व्यक्ति मुहम्मद अमीन ने कहा कि प्रारम्भ में हमें नमाज अदा करने में बड़ी कठिनाई हुई थी क्योंकि अरबी भाषा में नमाज पढ़ना और उसको सीखना बड़ा कठिन था लेकिन अब खुदा के फज्ल से इसके उच्चारण में कोई कठिनाई नहीं। उन्होंने आगे कहा कि चिसयाबास के रहनेवाले कुक्र और शिर्क के अन्धेरे में भटक रहे हैं। कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट आपस में लड़ रहे हैं लेकिन मुसलमानों की तरफ से प्रचार वप्रसार की सर्गरमियां उन लोगों के बीच तेजी से चल रही हैं जिससे अच्छे परिणाम की आशा है।

कनाडा के ओंटारियो प्रान्त में मुसलमानों के लिए आइली कानून –

ओंटारियो प्रान्त में मुसलमानों के खान्दानी विवादों के समाधान के लिए इस्लामी शरअी कानून रायज करने का एलान किया गयाहै। अब शादी, तिलाक और खान्दानी मामिलों के विवाद इन्हीं कानूनों के अनुसर हल होंगे। ओंटारियो की हुकूमत हे कि यहूदी अपने कानून के अनुसार घरेलू मध्यस्थताा का एक्ट प्रयोग कर रहे हैं। अतः मुसलमानों को अपने आपसी वाद विवाद को अपने शरअी कानून के अनुसार तय करने के अधिकार से वंचित नही किया जा सकता। ओंटारियो कनेडा और पश्चिमीा दुन्या का पहला इलाका है जिसने अपनी कानूनी व्यवसथा में शरअी कानून को शामिल किया है।

१५ मिनट मोबाइल बन्द रखे तो दिमाग खुलेगा

वैज्ञानिकों के अनुसार आपकी दिमांगी शक्ति अंडा खाने से काफी बढ़ सकती है। वैज्ञानिकों ने यह भी कहा कि अगर आपा दिन में आराम करन के समय करीब १५ मिनट तक अपने मोबाइल फोन को स्विच आफ कर दें तो इससे आपका आईक्यू लेबिल काफी बढ़ सकता है। विज्ञान की पत्रिका न्यू साइंटिस्ट के अनुसार वैज्ञानिकों ने प्रोटीनदार भोजन, रात में अच्छी नींद, जिसमानी कसरत तथा कठिन पहेलियों को हल करने के कोशिश को भी आईक्यू लेबिल बढ़ाने में मददगार पाया है। लोगों को शराब से दूर रहने की सलाह दीगयी है, लेकिन अगर लोग नाश्ते में प्रोटीन दार भोजन तथा दोपहर में खाने में अंडे का इस्तेमाल करें तो इससे दिमाग पर अच्छा असर पड़ता है वैज्ञानिकों ने यह भी कहा है कि लोग नाश्ते के बचना नहीं चाहिए। सुबह का नाश्ता दिमाग के लिए काफी लाभकारी है।

आप लखनऊ में रोज़ा इफ़तार करके और मगरिब की नमाज पढ़ कर रियाज में बैठे अपने किसी मित्र या सम्बन्धी से मोबाइल पर बात कीजिए वह आपको बताएगा कि अभी यहां अस्र की नमाज नहीं हुई। वह आपके इफतार करने पर इफतार नहीं कर सकता बल्कि अब वह अस्र पढ़ेगा, अतः हमारी उस की ईद में भी अंतर रहेगा।